साईं सृजन पटल

Website : www.sainsrijanpatal.com

MSME Registration No.
UDYAM-UK-05-0103926

मासिक ई-पत्रिका

लेखन और सृजन के उन्नयन के लिए सदैव प्रतिबद्ध

वर्ष-3 | अंक-23 | जून - 2026 | पृष्ठ-28 | निःशुल्क

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट
कुलपति

मो०– +91 7579138434
ई-मेल-vcssju@gmail.com

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि 'साईं सृजन पटल' मासिक पत्रिका का जून, 2026 को 23वां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। पत्रिकाएं हमारे समाज को बेहतर करने, चेतनाशील बनाने और अपनी जड़ों से जोड़े रखने का प्रयास करती हैं। इसके साथ ही पत्रिकाएं देश, काल एवं परिस्थितियों से भी जोड़े रखती हैं। मुझे ज्ञात है कि 'साईं सृजन पटल' पत्रिका स्तरीय सामग्रियों को प्रकाशित कर रही है। इस पत्रिका ने उत्तराखण्ड की संस्कृति, समृद्ध विरासत और परंपरा आदि से जुड़े विषयों को भी पाठकों तक पहुंचाने का स्तुत्य प्रयास किया है। समय-समय पर इस पत्रिका में उत्तराखण्ड के तीर्थाटन, पर्यटन, वन-संपदा, शिल्प, कला, पर्यावरण संरक्षण, लोकसंस्कृति, उत्सव, सिनेमा और बागवानी आदि पर केंद्रित विषय भी प्रकाशित हो रहे हैं, जो महत्वपूर्ण साबित हो रहे हैं। इस पत्रिका ने जहां एक ओर पाठकों का ज्ञानवर्धन किया है वहीं दूसरी ओर विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों को लाभान्वित किया है। आज इस पत्रिका के माध्यम से युवा पीढ़ी संस्कारों को सीख रही है। इसने नवोदित लेखकों को भी अपने विचार साझा करने के लिए मंच दिया है। इस पत्रिका के माध्यम से राष्ट्रीय फलक पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले उत्तराखण्ड की प्रतिभाओं की जानकारी भी दी जा रही है। जिससे हमारे युवाओं को प्रेरणा मिल रही है। वे उनसे प्रेरित होकर राष्ट्रहित और विकसित भारत बनाने की दिशा में कार्य करेंगे। मैं आशा करता हूं कि आगे भी यह पत्रिका स्तरीय लेखों के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य करे।

मैं इस पत्रिका के निरंतर प्रकाशन के संपादक, संपादकीय मंडल एवं पत्रिका से जुड़े सभी सहयोगियों को अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

20 जून 2026

प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट

संपादकीय

आपकी अपनी पत्रिका 'साईं सृजन पटल' अपने द्विवार्षिक पड़ाव की ओर गतिमान है। पत्रिका का 23 वां अंक आपके सम्मुख है। आस्था से जुड़े लेखों में सिद्ध पीठ सुरकंडा देवी मंदिर और हेमकुंड साहिब की यात्रा को सम्मिलित किया गया है, साथ ही दून विश्वविद्यालय में हिन्दू अध्ययन पाठ्यक्रम पर भी विस्तृत आलेख प्रकाशित किया गया है। अल्मोड़ा का ताम्र शिल्प, 'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत कौशल विकास और नर्सिंग अधिकारी ऋचा चौहान की फोटोग्राफी जैसी प्रस्तुतियां सृजन की ओर ले जाती हैं। सूबे के पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी को पद्म भूषण, पिरुल वुमेन मंजू शाह को गौरा देवी सम्मान, डॉ.कन्नन वारियर को एडिटर ऑफ डिस्टिंक्शन अवॉर्ड और प्रदेश के छह कलाकारों को उस्ताद बिस्मिल्लाह खान – युवा पुरस्कार, इन सबके कृतित्व को रेखांकित कर मान बढ़ा रहा है। मुख्यमंत्री का जौनसार के लोक सांस्कृतिक महोत्सव में प्रतिभाग और ध्याणी मिलन समारोह उत्तराखंड की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के परिचायक हैं। दीदी की लाइब्रेरी,दून विश्वविद्यालय में कैंपस प्लेसमेंट, काव्य संग्रह-'जिन्दगी के पन्ने' का प्रकाशन, अभिमुखीकरण व संवेदीकरण कार्यक्रम, कर्णप्रयाग रेलवे लाईन और मेटेरियोविजिलेंस पर भी ज्ञानवर्धक जानकारी उपलब्ध करवाई गई है। 'कारा एक प्रथा' गढ़वाली फिल्म की सटीक समीक्षा भी लिखी गई है। ऋषिकेश की मीनाक्षी भाटिया का पीसीएस परीक्षा में शानदार प्रदर्शन सराहनीय है। एम्स ऋषिकेश में अंगदान मानवता की सच्ची मिसाल है। एसएसजे विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय के संदेश से पत्रिका का मान और जिम्मेदारी दोनों बढ़े हैं।

प्रो. (डॉ.) के. एल. तलवाड़

साईं सृजन पटल
मासिक ई-पत्रिका

संपादक/स्वामी/प्रकाशक
प्रो.के.एल.तलवाड़
(सेवानिवृत्त प्राचार्य)
मो. 9412142822
ई-मेल: sainsrijanpatal@gmail.com
वेबसाईट - sainsrijanpatal.com

उप संपादक
अंकित तिवारी
एम.ए., एल.एल.बी.
मो. 7678117638

सह संपादक
अमन तलवाड़
मो. 7300883189
द्वारा ईजी ग्राफिक्स,
दया पैलेस, हरिद्वार रोड,देहरादून (उत्तराखंड)
से मुद्रित करवाकर 'साईं कुटीर'
आर.के.पुरम, जोगीवाला, देहरादून
(उत्तराखंड) से प्रकाशित

सलाहकार मंडल
डॉ.एस.डी. जोशी, वरिष्ठ फिजिशियन
प्रो. जानकी पंवार (सेवानिवृत्त प्राचार्य)
प्रो. राजेश कुमार उभान (सेवानिवृत्त प्राचार्य)
डॉ० अनूप वीरेन्द्र कठैत (लेखक/अभिनेता)
डॉ. चन्द्रभूषण बिजल्वाण, साहित्यकार

आवरण पृष्ठ

पृष्ठभूमि में हर्षिल, इन्सेट में –पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी को पद्म भूषण सम्मान, योग दिवस पर चंपावत में मुख्यमंत्री, चतुर्थ केदार रुद्रनाथ (फोटो सौजन्य- श्री हरीश भट्ट), भिकियासैंण कॉलेज में सूती लिनन बैग पर ऐपण बनाती छात्रा व श्री हेमकुंड साहिब की यात्रा।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में तथ्यों संबंधी विचार लेखकों के निजी हैं, जिनसे प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

धर्म क्षेत्रे

आस्था, शक्ति व लोकपरंपरा का अद्भुत केंद्र सिद्धपीठ माँ सुरकण्डा देवी मंदिर

अंकित तिवारी, उप संपादक

समुद्र तल से लगभग 9995 फीट की ऊँचाई पर स्थित सिद्धपीठ माँ श्री सुरकण्डा देवी मंदिर एक ऐसा दिव्य स्थल है, जहाँ प्रकृति की अनुपम छटा और देवी की अलौकिक कृपा एक साथ अनुभव की जा सकती है। यह मंदिर मसूरी–चंबा रोड पर कद्दूखाल के पास स्थित है। यह स्थान धनोल्टी से 8 किमी व मसूरी से 40 किमी की दूरी पर है।मान्यता है, कि जब राजा दक्ष ने कनखल में यज्ञ का आयोजन किया तो उसमें सभी देवी–देवताओं को आमंत्रित किया। लेकिन भगवान शिव को आमंत्रित नहीं किया। इस पर राजा दक्ष की पुत्री व शिव की पत्नी सती ने शिव से यज्ञ में जाने की अनुमति मांगी। शिव के मना करने पर भी सती यज्ञ में चली गई, वहां भगवान शिव के प्रति अपमानजनक बातें सुनकर सती यज्ञ कुण्ड में कूद गई। ऐसा होने पर शिव ने क्रोधित होकर सती का शव लेकर हिमालय में चारों ओर घुमाया। शिव के क्रोध को शांत करने के लिए भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र से सती के शव को काट दिया। मान्यता है कि माता सती का सिर जिस स्थान पर गिरा, वह सुरकुट पर्वत है, जो कालांतर में सुरकण्डा देवी सिद्धपीठ के नाम से विख्यात हुआ। इसी कारण इसे देश के 51 प्रमुख शक्तिपीठों में विशेष स्थान प्राप्त है। इस सिद्धपीठ से जुड़ी एक लोक मान्यता यह भी सर्वविदित है कि इस मंदिर की स्थापना सदियों पूर्व आनंदू आनंद सिंह जड़धारी द्वारा की गई थी। जनश्रुति के अनुसार सदियों पूर्व जड़धार गाँव के निवासी आनंद सिंह जड़धारी देहरादून से सामान लेकर लौट रहे थे। मार्ग में उन्हें एक असहाय वृद्धा मिली जिसने अपने साथ ले चलने का आग्रह किया। अन्य लोगों ने मना कर दिया, किन्तु दयालु स्वभाव के आनंद सिंह ने वृद्धा को अपने सामान के ऊपर बैठा लिया और हिम्मत के साथ आगे चलते गए। काफी दूर चलने के बाद जब वह कुछ देर विश्राम के लिए रुके तो इतने में वद्ध महिला अंर्तध्यान हो गई। घर पहुंचने पर आनंद सिंह जड़धारी को उस वृद्ध महिला ने स्वप्न में देवी के रूप में दर्शन दिए और कहा कि तुम सबसे ऊंची धार में खुदाई करना, खुदाई से उस स्थान पर स्वयंभू दिव्य शिला प्रकट हुई, जिसे जड़धार गांव वासियों ने वहाँ पर मंदिर बनाकर स्थापित किया, तब माँ ने कहा जड़धारी वंश मेरा मैती कहलाएगा। तब से जड़धारी लोग देवी के मैती के रूप में मंदिर का प्रबंधन व सेवा करते आ रहे हैं।

सुरकण्डा देवी मंदिर की सबसे विशेष बात इसकी जीवंत लोक परंपराएँ हैं। जड़धार गांव के लोग हर तीसरे वर्ष मां को चैत्र नवरात्र के मौके पर अपने मायके जड़धार गांव बुलाते हैं। ढोल–नगाड़ों के साथ साथ मां की चल प्रतिमा को जड़धार गांव के लोग सिर पर रखकर नंगे पांव करीब 16 किलोमीटर की

....शेष पृष्ठ : 20 पर

अल्मोड़ा के इतिहास का मील का पत्थर : ताम्र शिल्प

उत्तराखण्ड राज्य की धरती अपने गर्भ में अनेक कलाओं को समाहित किए हुए है। ये अनगिनत कला कौशल ही इस धरती की पहचान हैं। कुमाऊँ की धरती पर जन्म लेने के कारण इसको नजदीक से जानने का अवसर मिला है या यूँ कहूँ कि कला व संस्कृति को मैंने जिया है। सांस्कृतिक विरासत के साथ– साथ इस क्षेत्र के हरेक पक्ष को जानने का अवसर मिला है। उत्तराखंड राज्य का प्राचीन एवं ऐतिहासिक नगर अल्मोड़ा, कला व संस्कृति के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान रखता है। विशेष रूप से इस शहर की पहचान बुद्धिजीवियों के नगर के रूप में की जाती है। इस क्षेत्र को कविवर पंत तथा महादेवी वर्मा ने भी अपनी कर्मस्थली के रूप में चुना था। इसके अतिरिक्त बाल– मिठाई, दशहरा पर्व , होली, ऐपण कला, मंदिर व धार्मिक स्थल और रामलीला आदि के कारण भी इस शहर की पहचान है। इनमें से कुछ विषयों में , मैं अपने विचार साईं सृजन पत्रिका के माध्यम से रख पाई हूँ। एक ऐसा विषय, जो विशेष रूप से जिसके पहचान बनाता है, वह है यहाँ का ताम्र शिल्प। इसकी कारण इस शहर को ताम्र नगरी भी कहा जाता है। यदि इसके इतिहास पर नजर डालें तो , इसका अत्यंत प्राचीन इतिहास है। कहा जाता है कि सोलहवीं

शताब्दी में चंद राजाओं ने, अल्मोड़ा की स्थापना के पश्चात अपना मुख्यालय चम्पावत से यहाँ स्थानांतरित किया था और इसके साथ ही अल्मोड़ा में चन्द राजाओं का शासन प्रारंभ हुआ। चन्द राजा अपने कोषागार की व्यवस्था बनाने के लिए ताम्र शिल्पियों को चम्पावत से अल्मोड़ा लेकर आये। ये शिल्पी चम्पावत के अतिरिक्त बागेश्वर, बेरीनाग, पिथौरागढ़, गंगोलीहाट आदि स्थानों में भी बसे हुए थे। तत्कालीन व्यवस्था के अनुसार राजाओं के जारी शासनादेश पर ताँबे से बनी एक विशेष मोहर की छाप लगती थी और यह मुहरयुक्त शासनादेश ही प्रभावी माना जाता था। इन मुहरों को बनाने का अधिकार केवल इन ताम्र शिल्पियों को ही था जिन्हें 'तामता' कहा जाता था और धीरे धीरे अंग्रेजी का अपभ्रंश 'टम्टा' हो गया। ये ताम्र शिल्पी समुदाय ताम्रधातु की खोज में इतने दक्ष थे कि जमीन के गर्भ में तांबे की खोज भी स्वयं कर लेते थे जबकि उस समय इनके पास न ही कोई वैज्ञानिक ज्ञान था और न ही कोई उपकरण। इस प्रकार अल्मोड़ा में ताम्र शिल्प का उदय आज से लगभग 500 वर्ष पूर्व माना जाता है। धीरे–धीरे 1814 में राज–वंश के लुप्त होने के पश्चात कुमाऊं में ताम्र की कला में परिवर्तन होता चला गया, साथ ही अनेक वस्तुओं का निर्माण प्रारंभ हुआ और ताम्र शिल्प, तामता (टम्टा) समुदाय का एक परम्परागत कौशल बनता चला गया। अंग्रेजी शासन काल में खनन पर रोक लगने के कारण इस कार्य की रफ्तार में कुछ कमी आई परन्तु आजादी के पश्चात अल्मोड़ा में ताम्र शिल्पकला उद्योग ने फिर से उभरकर अपनी एक विशिष्ट पहचान बना ली और लगभग सौ से अधिक परिवार इस उद्योग से परम्परागत बर्तन बनाने का कार्य करने लगे। उनके निवास व कार्य क्षेत्र का नाम ही टम्टा मौहल्ला पड़ गया। इस क्षेत्र में हथौड़ों की ध्वनि सदा गुंजायमान रहती है, जो इसकी पहचान है। चूंकि तांबा एक पवित्र धातु मानी जाती है तथा स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह उत्तम धातु है इसीलिये पूजा से सम्बंधित तथा भोजन से सम्बन्धित बर्तनों का निर्माण अधिक होता गया जिसमे परंपरागत तौला (चावल बनाने का बर्तन), भड्डू (दाल बनाने का बर्तन), गागर, परात, दीपक , थाली , लोटा, अर्ग (पूजा में जल अर्पण करने हेतु) के अतिरिक्त वाद्य यंत्र रणसिंघा, तुरतुरी आदि बनाए जाते थे। तत्कालीन समय में तांबा सस्ता था और घर में तांबे व पीतल के बर्तनों का ही प्रयोग किया जाता था , इसलिए ताम्र शिल्प का प्रसार अधिक हुआ। ये सभी पात्र और यंत्र, तांबे की पतली चादर को पीट– पीट कर आकार दे कर बनाई जाते हैं। वर्तमान में सामाजिक परिवर्तन तथा आवश्यकता के अनुसार ताम्र शिल्प की कला में परिवर्तन देखने को मिलता है। जिसके कारण परंपरागत शिल्प का आधुनिकीकरण भी हुआ है। आज तांबे के वाटर फिल्टर, गिलास, जग आदि भी बनने लगे हैं। इन्हें मूल परंपरागत तरीके से और मॉडर्न रूप दोनों में बनाया जाने लगा है। परन्तु आज धीरे–धीरे इस ताम्र शिल्प में कमी आई है, जिसका प्रमुख कारण पलायन है। आज की पीढ़ी अपने इस व्यवसाय से विमुख हो रही है। क्योंकि इसमें बहुत मेहनत की आवश्यकता होती है। आज की पीढ़ी नौकरियों के पीछे भाग रही है। इसके साथ ही मशीनों के द्वारा भी तांबे के सामान बनने लगे हैं। आज जब टम्टा मौहल्ला से गुजरते हैं तो हथौड़ों की आवाज मद्धिम होती सुनाई देती है। चुनिंदा लोग ही इस काम को कर रहे हैं लेकिन व्यक्तिगत तथा सरकारी प्रयासों से ताम्र शिल्प को राष्ट्रीय पहचान देने का प्रयास किया जा रहा है।

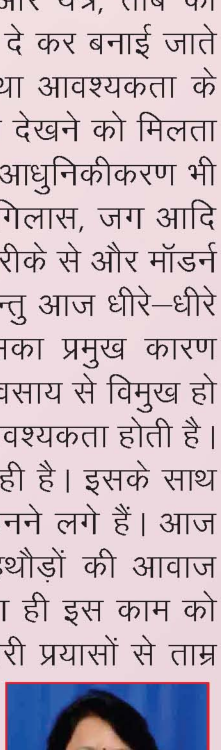

प्रस्तुति : डॉ. विनीता चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर,
डी.डब्लू.टी.कॉलेज, देहरादून

दून विश्वविद्यालय

हिंदू अध्ययन पाठ्यक्रम

ज्ञान और संस्कृति के साथ रोजगार के बेहतर अवसर

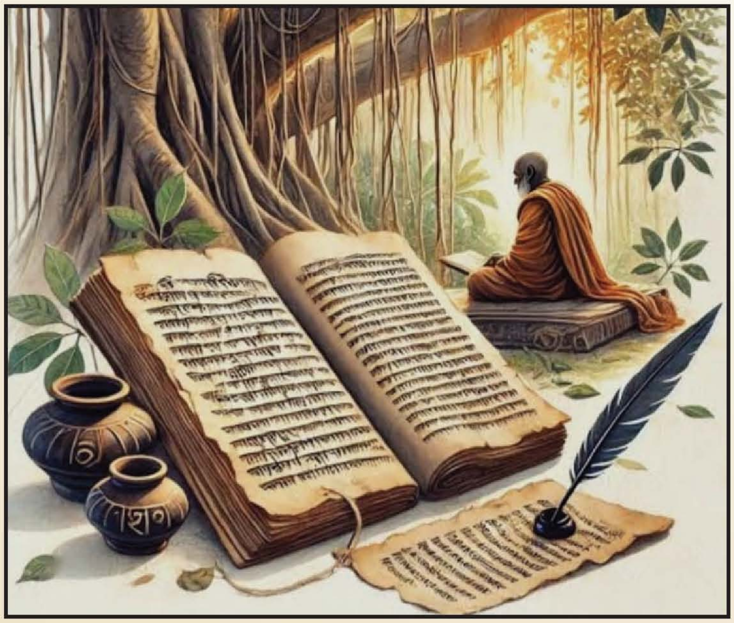

देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों में "हिंदू अध्ययन" (Hindu Studies) पाठ्यक्रम तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। कई लोग इसे केवल पूजा–पाठ, धार्मिक अनुष्ठानों या कर्मकांड से जोड़कर देखते हैं, जबकि वास्तविकता इससे कहीं अधिक व्यापक और गहन है। हिंदू अध्ययन की उपाधि किसी विशेष पूजा पद्धति का प्रशिक्षण नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा, दर्शन, इतिहास, संस्कृति और सामाजिक विकास का शैक्षणिक अध्ययन है। यह एक बहुआयामी विषय है, जिसमें वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता, पुराण, भारतीय दर्शन, कला, संगीत, साहित्य, वास्तुकला, योग, आयुर्वेद तथा सामाजिक संरचनाओं का विश्लेषण शामिल होता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय सभ्यता के बौद्धिक और सांस्कृतिक पक्ष को समझाना है। विश्व के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में पहले से ही यहूदी, पारसी, इस्लामिक, बौद्ध और क्रिश्चियन थियोलॉजी जैसे विषयों का अध्ययन किया जाता है, उसी प्रकार हिंदू अध्ययन भी एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक अनुशासन है।

हिंदू अध्ययन भारतीय उपमहाद्वीप में विकसित सनातन परंपराओं, दर्शन, इतिहास और जीवन–पद्धति का विश्लेषणात्मक अध्ययन है। इसका उद्देश्य धर्म, संस्कृति और प्राचीन ज्ञान परंपराओं के आलोचनात्मक अध्ययन की परंपरा को विकसित करना है। यह केवल धार्मिक चिंतन तक सीमित नहीं है, बल्कि समग्र जीवन–मूल्यों, कला, विज्ञान और समाज की विस्तृत समझ विकसित करने वाली विचारधारा है।

यह ज्ञान की शाश्वत परंपरा, नैतिकता और कर्तव्यबोध के साथ–साथ आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है। साथ ही, आधुनिक समय की वैश्विक चुनौतियों और विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद स्थापित करने में भी सहायक है। यह विधा शैक्षणिक संस्थानों और विश्वविद्यालयों में प्राचीन ज्ञान परंपरा के संरक्षण, गलत धारणाओं के निवारण तथा वैश्विक स्तर पर हिंदू धर्म और भारतीय संस्कृति की गहरी समझ विकसित करने की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण आयाम है। वर्तमान में देश के कई प्रतिष्ठित संस्थानों में हिंदू अध्ययन विभाग शोध और पठन–पाठन को बढ़ावा दे रहे हैं, जिनमें बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दून विश्वविद्यालय, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नालंदा विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, मुंबई विश्वविद्यालय, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, श्री श्री विश्वविद्यालय, बाबा साहब डॉ अंबेडकर मुक्त विश्वविद्यालय अहमदाबाद, गुजरात तथा गुजरात टेक्नोलॉजिकल विश्वविद्यालय सहित लगभग 30 विश्वविद्यालयों में यह पाठ्यक्रम संचालित हो रहा है।

हिंदू अध्ययन युवाओं की तार्किक, विश्लेषणात्मक एवं सृजनात्मक क्षमता को विकसित करने के साथ–साथ रोजगार की दृष्टि से भी एक लोकप्रिय पाठ्यक्रम बनता जा रहा है। हिंदू अध्ययन में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद शिक्षा, अनुसंधान, संस्कृति मंत्रालय, पर्यटन और मीडिया के क्षेत्रों में उत्कृष्ट करियर के अवसर उपलब्ध हैं। इसके अंतर्गत शिक्षण, संग्रहालयों, पुरालेखों, प्रकाशन संस्थानों तथा शोध संस्थाओं में कार्य किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त धार्मिक पर्यटन विशेषज्ञ, सांस्कृतिक पत्रकार और शोध विश्लेषक के रूप में भी रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर मौजूद हैं।

इसके साथ ही शिक्षण, शोध एवं अकादमिक प्रकाशन हेतु विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और शोध संस्थानों में अध्यापन, शोध कार्य, शोध लेखन एवं प्रकाशन के अवसर उपलब्ध हैं, क्योंकि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नियमों के अनुसार राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा का प्रावधान इस विषय में युवाओं को

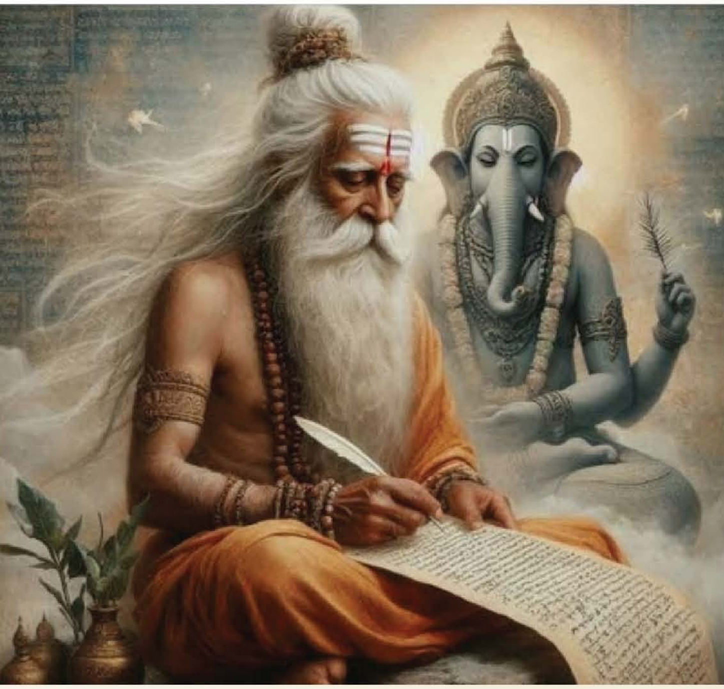

अध्ययन की ओर प्रेरित करता है। पर्यटन एवं संस्कृति के अंतर्गत धार्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन, जैसे मंदिरों और तीर्थस्थलों से जुड़े हेरिटेज मैनेजमेंट तथा गाइडिंग सेवाओं में भी अवसर उपलब्ध हैं। संग्रहालय और पुरालेख के क्षेत्र में राष्ट्रीय संग्रहालयों, पांडुलिपि पुस्तकालयों अथवा अभिलेखागारों में क्यूरेटर या पुरालेखपाल के रूप में प्राचीन ग्रंथों और कलाकृतियों के संरक्षण एवं प्रबंधन का कार्य किया जा सकता है। मीडिया और प्रकाशन के क्षेत्र में धार्मिक एवं सांस्कृतिक पत्रकारिता, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार चैनलों और डिजिटल पोर्टलों पर धर्म, अध्यात्म और संस्कृति से जुड़े लेखन एवं कंटेंट निर्माण में इस डिग्री का विशेष महत्व है। संस्कृति, इतिहास और सामाजिक विषयों पर पत्रकारिता, कंटेंट राइटिंग एवं संपादन के अतिरिक्त धार्मिक और प्राचीन साहित्य प्रकाशित करने वाले संस्थानों, जैसे गीता प्रेस अथवा चौखम्बा संस्कृत संस्थान में पांडुलिपियों के संपादक और प्रूफरीडर के रूप में भी कार्य किया जा सकता है। जनसंपर्क एवं अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में भी अवसर कम नहीं हैं। विदेशों में भारतीय दूतावासों, सांस्कृतिक केंद्रों तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद में भारतीय संस्कृति विशेषज्ञ के रूप में सेवाएँ दी जा सकती हैं।

इसके साथ ही भारतीय धर्म, योग और दर्शन का प्रचार–प्रसार करने वाले संस्थानों, जैसे रामकृष्ण मिशन तथा चिन्मय मिशन में जनसंपर्क अधिकारी अथवा प्रशासनिक पदों पर कार्य करने के अवसर भी उपलब्ध हैं। अध्यात्म, योग एवं आयुर्वेद के क्षेत्र में योग, ध्यान, आयुर्वेद और भारतीय जीवनशैली से जुड़े संस्थानों में अकादमिक एवं परामर्श कार्य के साथ ही कर्मयोग, ज्ञानयोग और ध्यान की गहरी समझ के आधार पर योग प्रशिक्षक अथवा वेलनेस काउंसलर के रूप में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी करियर बनाया जा सकता है। आज वैश्विक स्तर पर भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति अनेक देशों की रुचि लगातार बढ़ रही है। योग, ध्यान, आयुर्वेद और भारतीय दर्शन को दुनिया भर में स्वीकार्यता मिल रही है। ऐसे समय में हिंदू अध्ययन का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि यह भारतीय संस्कृति को आधुनिक संदर्भों में समझने और प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करता है। यह विषय विद्यार्थियों को आलोचनात्मक सोच, सांस्कृतिक समझ और ऐतिहासिक दृष्टि प्रदान करता है तथा भारतीय समाज और संस्कृति की बेहतर समझ विकसित करने का माध्यम बनता है। किसी भी सभ्यता को समझने के लिए उसके विचारों, साहित्य और परंपराओं का अध्ययन आवश्यक होता है। इस दृष्टि से हिंदू अध्ययन का पाठ्यक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिंदू अध्ययन की विधा का उद्देश्य किसी विशेष पूजा पद्धति को बढ़ावा देना नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता के ज्ञान, दर्शन और सांस्कृतिक विरासत को समझना और संरक्षित करना है। यह विषय नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ते हुए वैश्विक बौद्धिक संवाद में भारत की सशक्त उपस्थिति सुनिश्चित करने में सहायक होगा।

प्रस्तुति-प्रो.एच.सी. पुरोहित
समन्वयक, सेंटर फॉर हिन्दू स्टडीज
दून विश्व विद्यालय, देहरादून
(उत्तराखण्ड)

उपजिलाधिकारी बनेंगी ऋषिकेश निवासी मीनाक्षी भाटिया

कहा जाता है 'जहां चाह, वहां राह', इस कथन को सच कर दिखाया है प्रगति विहार ऋषिकेश निवासी मीनाक्षी भाटिया ने। उत्तराखंड लोक सेवा आयोग – (यूकेपीएससी) 2024 की पीसीएस परीक्षा में सामान्य वर्ग में पांचवीं रैंक प्राप्त कर उन्होंने डिप्टी कलेक्टर पद हासिल किया है। मीनाक्षी भाटिया की सफलता केवल एक प्रतियोगी परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन तक सीमित नहीं है,बल्कि यह संघर्ष, आत्मविश्वास और पारिवारिक संबल की भी प्रेरक कहानी है। मीनाक्षी ने बताया कि वर्ष 2003 में उनके पिता का देहांत हो गया था, उस समय वह मात्र डेढ़ वर्ष की थी। पिता के असामयिक निधन के बाद परिवार की जिम्मेदारी उनकी माता नीलम भाटिया पर आ गई थी। आर्थिक चुनौतियों के बावजूद नीलम भाटिया ने हार नहीं मानी और परिवार के भरण–पोषण करने के लिए 'टिफिन सर्विस' का काम शुरू किया।

समय बीतता गया और मीनाक्षी व उनकी बड़ी बहन शिल्पा ने भी अपनी मां का सहयोग किया। दोनों बहनों ने टिफिन पहुंचाने के साथ–साथ अपनी पढ़ाई भी जारी रखी तथा बाद में ट्यूशन पढ़ा कर परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने में सहयोग दिया। उनकी मां भोजन बनाती थीं और दोनों बहनें पैदल लंबी दूरी नापकर टिफिन की होम डिलीवरी करती थीं। कुछ समय बाद पैसे जुटाकर उन्होंने स्कूटी खरीदी तो होम डिलीवरी में थोड़ा समय बचने लगा और उन्होंने उस समय को पढ़ाई में लगाया।

परिश्रम और दृढ़संकल्प रंग लाया, बड़ी बहन शिल्पा ने वर्ष 2021 में उत्तराखंड पीसीएस परीक्षा के प्रथम प्रयास में सफलता प्राप्त कर प्रशासनिक सेवा – सांख्यिकी अधिकारी में अपना स्थान बनाया। वर्तमान में वह पौड़ी में कार्यरत हैं। बड़ी बहन की उपलब्धि से प्रेरित होकर मीनाक्षी ने भी अपने लक्ष्य की दिशा में लगातार मेहनत जारी रखी और अंतत डिप्टी कलेक्टर बनने का सपना साकार किया। मीनाक्षी बताती हैं कि वह तहसील कर्मियों को भी टिफिन की डिलीवरी देने जाया करती थी। यह गर्व की बात है कि अब उन्हें तहसील प्रशासन की कमान संभालने का मौका मिलेगा। मेधावी छात्रा रहीं मीनाक्षी ने वर्ष 2023 में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की तथा विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त कर राज्यपाल महोदय के हाथों गोल्ड मेडल से सम्मानित हुईं। मीनाक्षी भाटिया की प्रेरणादायी सफलता प्रदेश के हजारों युवाओं ,विशेष रूप से छात्राओं के लिए, एक संदेश भी है कि परिस्थितियां चाहे कितनी भी कठिन क्यों न हों, यदि लक्ष्य के प्रति दृढ़ निश्चय हों और प्रयास निरंतर हों, तो सफलता अवश्य प्राप्त होती है। भाटिया परिवार की इन दोनों बेटियों ने परिवार का माथा गर्व से ऊंचा कर दिया है।

साईं सृजन पटल परिवार की ओर से मीनाक्षी भाटिया को अनेकानेक शुभकामनाएं।

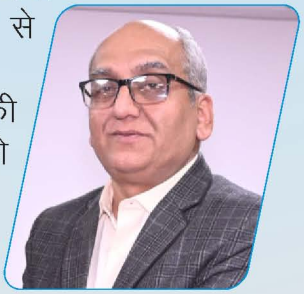

प्रस्तुति – प्रो.जी.के.ढींगरा
निदेशक – शोध एवं विकास, प्रोफेसर वनस्पति विज्ञान,
पं.ल.मो.शर्मा परिसर,श्रीदेव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय

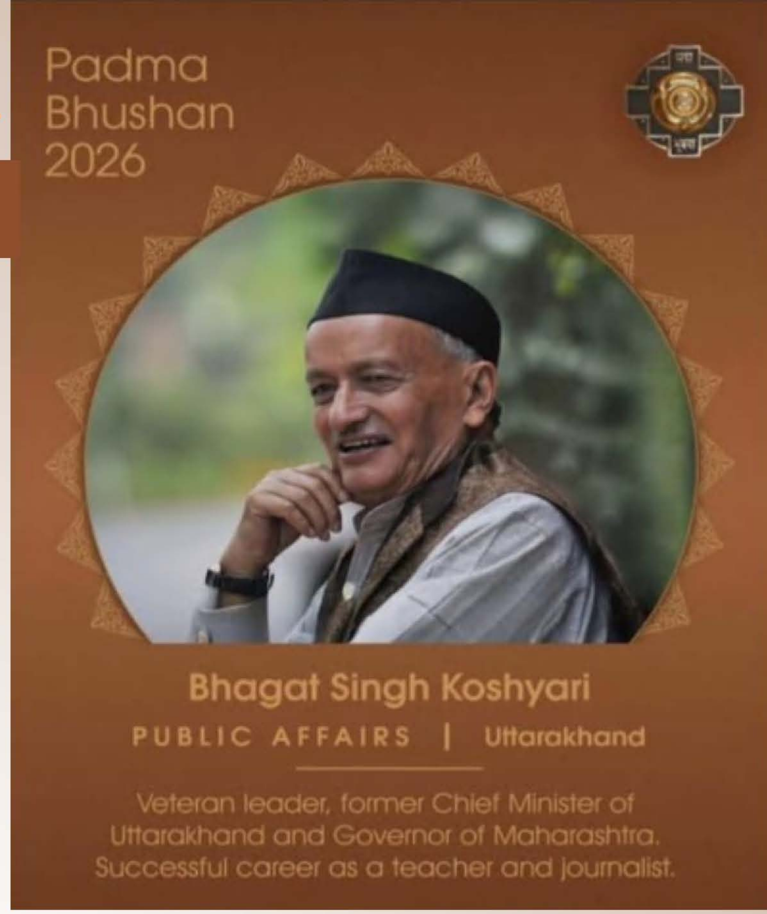

भगत सिंह कोश्यारी

'भगत दा' को लोक कार्य के लिए मिला 'पद्म भूषण'

25 मई को नई दिल्ली में राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू द्वारा उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और महाराष्ट्र के पूर्व राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी को लोक कार्य के लिए पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। राष्ट्रपति भवन के गणतंत्र मंडप में आयोजित हुए नागरिक अलंकरण समारोह में वर्ष 2026 के लिए पद्म पुरस्कार प्रदान किये गये। भगत सिंह कोश्यारी जिन्हें उत्तराखंड में 'भगत दा' के नाम से जाना जाता है, अपनी सादगी और अनुशासन के लिए जाने जाते हैं। समर्पित राष्ट्रवादी नेता,शिक्षाविद् , पत्रकार और समाजसेवी के रूप में उनकी अलग पहचान है। 17 जून 1942 को उत्तराखंड के बागेश्वर जिले के सुदूर गांव पलानधुरा में जन्में श्री कोश्यारी ने अपनी ग्रामीण पृष्ठभूमि के बावजूद दृढ़ संकल्प के साथ उच्च शिक्षा प्राप्त की और आगरा विश्वविद्यालय से संबद्ध अल्मोड़ा कॉलेज से अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर की डिग्री पूर्ण की। कुछ समय अध्यापन कार्य भी किया। वर्ष 1997 में उन्हें उत्तर प्रदेश विधान परिषद के लिए नामित किया गया था। नवंबर 2000 में उत्तराखंड के गठन के बाद, वह राज्य के पहले मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री बने और बाद में थोड़े समय (30 अक्टूबर 2001 से 1 मार्च 2002 तक) के लिए उत्तरांचल (अब उत्तराखंड) के मुख्यमंत्री के रूप में काम किया। वर्ष 2008 में वह राज्य सभा के लिए चुने गए और 2014 में वह नैनीताल–ऊधमसिंह नगर निर्वाचन क्षेत्र से लोक सभा के लिए चुने गए।

5 सितंबर 2019 को उन्हें महाराष्ट्र के राज्यपाल के रूप में नियुक्त किया गया था। अगस्त 2020 में उनके पास गोवा के राज्यपाल का अतिरिक्त प्रभार भी रहा। राजनीति में उनके योगदान के अलावा एक लेखक–पत्रकार के रूप में भी उनकी पहचान रही है। उन्होंने 'उत्तरांचल प्रदेश क्यों ?' और 'उत्तरांचल प्रदेश : संघर्ष एवं समाधान' नामक दो पुस्तकें लिखीं और प्रकाशित की,जो उत्तराखंड के विकास के प्रति उनकी संकल्पना और प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

प्रस्तुति - प्रो. (डॉ.) के. एल.तलवाड़

पुरस्कृत गढ़वाली फिल्म 'कारा एक प्रथा' : परंपरा, प्रतिशोध और स्त्री अस्मिता का द्वन्द्व

गढ़वाली सिनेमा में वर्ष 2024 में आई फिल्म 'कारा एक प्रथा' केवल एक कहानी नहीं, बल्कि समाज के उस जटिल सच का आईना है, जो परंपरा और स्त्री–अधिकारों के बीच फंसा हुआ है। यह फिल्म उत्तराखंड की एक प्राचीन लोक–प्रथा और वर्ष 2005 की एक वास्तविक घटना से प्रेरित होकर निर्मित की गई है, जिसमें घरेलू हिंसा, महिला उत्पीड़न और सामाजिक स्वीकृतियों के नाम पर स्थापित व्यवस्थाओं को गहराई से परखा गया है। फिल्म की केंद्रीय अवधारणा 'कारा प्रथा' है एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था, जिसमें विवाह असफल होने की स्थिति में स्त्री को दूसरा जीवनसाथी चुनने का अधिकार तो दिया जाता है, किंतु इसके साथ एक आर्थिक शर्त जुड़ी होती है। पुनर्विवाह से पहले नए पति द्वारा पहले पति को एक निश्चित धनराशि देनी पड़ती है, जिसे 'कारा' कहा जाता है। यह राशि पंचायत या गांव के बुजुर्गों की उपस्थिति में तय होती है, ताकि शोषण की संभावना कम हो सके। यह व्यवस्था एक ओर स्त्री को विकल्प देती है, तो दूसरी ओर उसे एक प्रकार के 'लेन–देन' का हिस्सा भी बना देती हैं। यहीं से फिल्म का मूल द्वंद्व शुरू होता है। निर्देशक सुनील बडोनी के निर्देशन में बनी यह फिल्म, निर्माता परिणीता बडोनी, डीओपी–एडिटर सारांश बडोनी तथा संगीतकार संतोष खेतवाल और आशीष पंत के सहयोग से एक सशक्त सिनेमाई रूप लेती है। मुख्य कलाकारों रमेश रावत (मोना), शिवानी भंडारी (जमुना), दिनेश बौड़ाई, अजय सिंह बिष्ट, कुसुम बिष्ट और राजेश मालगुड़ी ने अपने सजीव अभिनय से कहानी को वास्तविकता के बेहद करीब ला खड़ा किया है। फिल्म की कथा जमुना नामक एक शिक्षित, संवेदनशील और संघर्षशील स्त्री के इर्द–गिर्द घूमती है, जो आर्थिक तंगी, पारिवारिक दबाव और सामाजिक परिस्थितियों के चलते एक ऐसे विवाह में बंध जाती है, जहाँ उसे प्रेम या सम्मान के बजाय केवल हिंसा और अपमान मिलता है। उसका पति मोना, शराब और अहंकार में डूबा हुआ, उसे शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित करता है। यह चित्रण केवल एक व्यक्ति विशेष का नहीं, बल्कि उस व्यापक मानसिकता का प्रतीक है, जहाँ स्त्री को सहने के लिए बाध्य किया जाता है। जमुना का चरित्र इस फिल्म की आत्मा है। वह केवल पीड़िता नहीं, बल्कि प्रतिरोध का स्वर भी है। जब अत्याचार की सीमा पार हो जाती है, तो वह साहसपूर्वक उस संबंध को तोड़ देती है। इसके बाद 'कारा प्रथा' के तहत उसका पुनर्विवाह होता है, जो उसे एक नई शुरुआत का अवसर देता है। किंतु फिल्म का अंत एक दुखद मोड़ पर होता है, जहाँ पुरुष अहंकार और

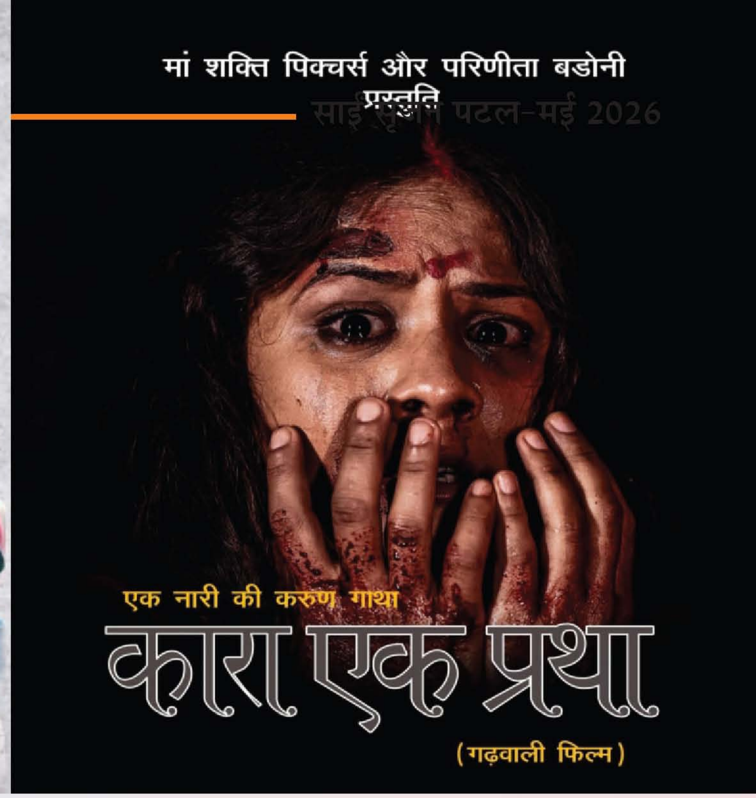

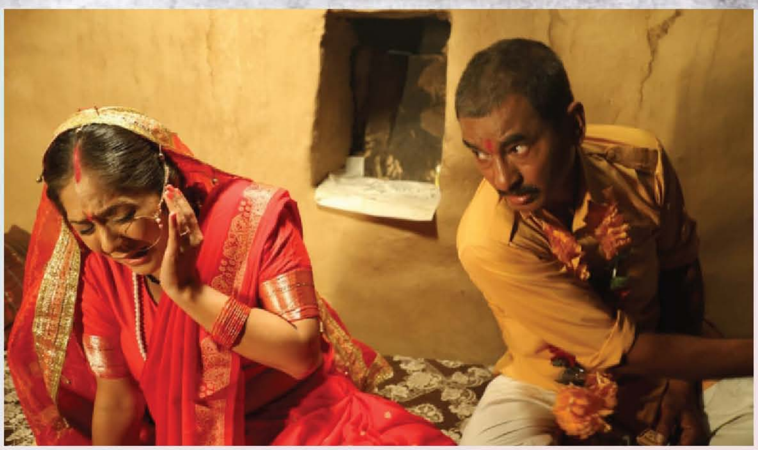

हिंसक प्रवृत्ति एक बार फिर स्त्री के जीवन को निगल लेती है। यह फिल्म अत्यंत सूक्ष्मता से यह प्रश्न उठाती है कि क्या किसी स्त्री की स्वतंत्रता और जीवन का निर्णय आर्थिक लेन–देन के आधार पर तय होना चाहिए? क्या 'कारा' जैसी प्रथाएं वास्तव में स्त्री को सशक्त बनाती हैं, या फिर वे उसे एक वस्तु में परिवर्तित कर देती हैं ? यही प्रश्न इसे स्त्री–विमर्श के केंद्र में स्थापित करता है। सिनेमा के स्तर पर भी यह फिल्म उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल कर चुकी है। दिल्ली में आयोजित दादा साहेब फाल्के फिल्म फेस्टिवल में इसे स्पेशल फेस्टिवल मेंशन अवार्ड मिला, वहीं चेन्नई के कॉलीवुड फिल्म फेस्टिवल में इसने बेस्ट इंडियन फीचर फिल्म, बेस्ट डायरेक्टर, बेस्ट एडिटर सहित कुल छह पुरस्कार जीते। कोलकाता के इंडियन इंडिपेंडेंट फिल्म फेस्टिवल में ऑनरेबल मेंशन और पुणे में आयोजित अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में बेस्ट फीचर फिल्म एवं बेस्ट स्क्रीनप्ले जैसे सम्मान प्राप्त कर इसने अपनी सशक्त प्रस्तुति का प्रमाण दिया है।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखें तो 'कारा प्रथा' एक द्विआयामी व्यवस्था है। एक ओर यह उस समय की सामाजिक संरचना में स्त्री को पुनर्विवाह का अवसर प्रदान करती है जो कि एक प्रगतिशील पहलू माना जा सकता है–वहीं दूसरी ओर यह स्त्री की स्वतंत्रता को एक आर्थिक सौदे में बदल देती है। यह द्वंद्व आज भी प्रासंगिक है, विशेषकर तब जब देश में घरेलू हिंसा के मामलों में पीड़ित महिलाएं न्यायिक प्रक्रिया की जटिलताओं से जूझती हैं। यहां यह विचार भी उभरता है कि यदि ऐसी पारंपरिक व्यवस्थाओं को कानूनी स्वरूप दिया जाए, तो क्या वे महिलाओं के लिए राहत का माध्यम बन सकती हैं ? एक ओर यह उन्हें लंबी न्यायिक प्रक्रिया से बचा सकती हैं, लेकिन दूसरी ओर यह भी सुनिश्चित करना होगा कि ऐसी प्रथाएं कहीं शोषण का नया रूप न बन जाएं। अंततः, 'कारा एक प्रथा' एक ऐसी फिल्म है, जो केवल मनोरंजन नहीं करती, बल्कि सोचने के लिए विवश करती है।

यह हमें यह समझने का अवसर देती है कि परंपराओं का अंधानुकरण नहीं, बल्कि उनका विवेकपूर्ण पुनर्मूल्यांकन आवश्यक है। स्त्री केवल सहानुभूति की पात्र नहीं, बल्कि अपने निर्णय स्वयं लेने वाली स्वतंत्र इकाई है और यही संदेश इस फिल्म की सबसे बड़ी उपलब्धि है। यह फिल्म पहाड़ की लोकसंस्कृति, सामाजिक जटिलताओं और स्त्री के अंतर्द्वन्द को जिस संवेदनशीलता और गंभीरता से प्रस्तुत करती है, वह न केवल सिनेमा प्रेमियों के लिए, बल्कि समाज के हर जागरूक नागरिक के लिए विचारणीय है।

प्रस्तुति – भारती आनंद 'अनंता',
लेखिका/ उद्घोषिका,
आकाशवाणी देहरादून

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान : ऋषिकेश

मौत के बाद भी जिंदगी बांट गई बेटी : अंगदान बना मानवता की मिसाल

ईश्वर के बाद यदि कोई किसी इंसान को जिंदगी दे सकता है, तो वह केवल अंगदान करने वाला व्यक्ति ही हो सकता है। यह केवल एक चिकित्सा प्रक्रिया नहीं, बल्कि मानवता का सर्वोच्च उदाहरण है–जहाँ एक जीवन की समाप्ति, कई जीवनों के पुनर्जन्म का कारण बनती है। एम्स ऋषिकेश में घटी हालिया घटना इसी सत्य को अत्यंत मार्मिक और प्रेरणादायक रूप में सामने लाती है।

बीते 21 अप्रैल को एक 23 वर्षीय युवती सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गई थी। उसे उपचार हेतु एम्स ऋषिकेश में भर्ती कराया गया, जहाँ ट्रॉमा सेंटर में विशेषज्ञ चिकित्सकों की निगरानी में उसका इलाज जारी रहा। लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। चिकित्सकीय टीम ने युवती को ब्रेन डेड घोषित कर दिया। यह क्षण केवल एक परिवार के लिए नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए अत्यंत दुखद था। किन्तु इसी दुख की घड़ी में एक ऐसा निर्णय लिया गया, जिसने इस पीड़ा को मानवता की महानतम मिसाल में बदल दिया। एम्स के चिकित्सकों ने युवती के परिजनों को अंगदान के लिए प्रेरित किया। अपनी जवान बेटी को खो चुके परिवार ने असाधारण साहस और संवेदनशीलता का परिचय देते हुए अंगदान की अनुमति प्रदान की। यह निर्णय न केवल उनके लिए, बल्कि उन अनजान लोगों के लिए भी जीवनदायी सिद्ध हुआ, जो मृत्यु से संघर्ष कर रहे थे। इस पुनीत निर्णय के परिणामस्वरूप तीन लोगों को नया जीवन मिला। युवती की

दोनों किडनी लंबे समय से किडनी रोग से जूझ रहे दो व्यक्तियों को प्रत्यारोपित की गईं, जबकि एक अन्य व्यक्ति को लीवर प्रत्यारोपण के माध्यम से जीवनदान मिला। उल्लेखनीय यह है कि एम्स ऋषिकेश में पहली बार लीवर ट्रांसप्लांट को सफलतापूर्वक अंजाम दिया गया–जो न केवल संस्थान, बल्कि पूरे उत्तराखंड के लिए ऐतिहासिक उपलब्धि है।

इस जटिल चिकित्सा प्रक्रिया को और भी विशेष बनाता है इसका समन्वय और समयबद्धता। रात लगभग 9 बजे शुरू हुई यह शल्य चिकित्सा करीब 13 घंटे तक चली और अगले दिन सुबह 10 बजे पूर्ण हुई। एक ही ओटी कॉम्पलेक्स में एक साथ किडनी और लीवर प्रत्यारोपण जैसी जटिल प्रक्रियाओं को

सफलतापूर्वक संपन्न करना चिकित्सकीय टीम की दक्षता, समर्पण और सामूहिक प्रयास का प्रमाण है। इस सफलता में नेशनल ऑर्गन एंड टिश्यू ट्रांसप्लांट ऑर्गेनाइजेशन (नोटो) की महत्वपूर्ण भूमिका रही, जिसकी सहायता से जरूरतमंद मरीजों की पहचान कर अंगों का उचित आवंटन किया गया। साथ ही, ग्रीन कॉरिडोर के माध्यम से एक किडनी और पैंक्रियाज को दिल्ली स्थित एम्स नई दिल्ली भेजा गया, जहाँ उनका सफल प्रत्यारोपण किया गया। यह भी उल्लेखनीय है कि एम्स ऋषिकेश की कार्यकारी निदेशक एवं सीईओ प्रोफेसर डॉ. मीनू सिंह के नेतृत्व में पिछले कुछ वर्षों से लीवर ट्रांसप्लांट की ट्रेनिंग संचालित की जा रही थी। इसी प्रशिक्षण और दूरदर्शिता का परिणाम है कि संस्थान ने इस जटिल प्रक्रिया को पहली बार में ही सफलता के साथ पूरा किया। निदेशक प्रोफेसर डॉ० मीनू सिंह ने इसे "सफलता का पहला पायदान" बताते हुए भविष्य में इस दिशा में और तेजी से कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया है। इस पूरी प्रक्रिया में अहमदाबाद के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. प्रांजल मोदी के मार्गदर्शन में एम्स की चिकित्सा अधीक्षक प्रोफेसर (डॉ.) बी. सत्यश्री सहित डॉ. कर्मवीर सिंह, डॉ. रजनीश अरोड़ा, डॉ. वाई.एस. पयाल, डॉ. अंकुर मित्तल, डॉ. विकास पंवार, डॉ. रोहित गुप्ता, डॉ. आनंद शर्मा, डॉ. कल्याणी, डॉ. शैरोन कंडारी, डॉ. भारती, डॉ. भारत भूषण भारद्वाज, डॉ. सारंग भारती सहित अनेक विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम ने अथक परिश्रम और समर्पण से इस मिशन को सफल बनाया। यह घटना केवल एक चिकित्सा उपलब्धि नहीं, बल्कि समाज के लिए एक गहरा संदेश है। अंगदान केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी है। एक ऐसा निर्णय, जो किसी के जीवन और मृत्यु के बीच की दूरी को समाप्त कर सकता है। आज भी हमारे समाज में अंगदान को लेकर कई भ्रांतियाँ और संकोच मौजूद हैं, जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है। इस युवती के परिजनों ने जिस साहस और करुणा का परिचय दिया, वह वास्तव में अनुकरणीय है।

उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि सच्ची श्रद्धांजलि केवल आँसू बहाना नहीं, बल्कि किसी और के जीवन को रोशन करना है। आज आवश्यकता है कि हम सभी इस प्रेरणादायक घटना से सीख लें और अंगदान के प्रति जागरूक बनें। यदि प्रत्येक व्यक्ति इस दिशा में एक कदम बढ़ाए, तो न जाने कितने घरों में जीवन की लौ फिर से जल उठेगी। आज आवश्यकता है : जागरूकता की, संकल्प की और उस साहस की, जो एक परिवार ने दिखाया।

प्रस्तुति : अंकित तिवारी, उप संपादक

पुस्तक समीक्षा

काव्य संग्रह: 'ज़िन्दगी के पन्ने'

'साईं सृजन पटल' से नियमित रूप से जुड़ीं लेखिका डॉ.विनीता चौधरी, एसोसिएट प्रोफेसर (शिक्षा विभाग) डी. डब्लू.टी. कॉलेज देहरादून द्वारा रचित – काव्य संग्रह 'जिन्दगी के पन्ने' पढ़ने का अवसर मिला। अविचल प्रकाशन हल्द्वानी से प्रकाशित इस पुस्तक की भूमिका वरिष्ठ साहित्यकार उद्धव भट्ट जी द्वारा लिखी गई है,जो अपने आप ही इस काव्य संग्रह की आत्मा को बखूबी रेखांकित करती है। 108 पृष्ठों से बंधी इस पुस्तक में 44 कविताएं संकलित हैं, जो मानव जीवन में प्रेम, करुणा, सुख–दुःख, साहस, संघर्ष व संवेदना जैसी भावनाओं को प्रभावी ढंग से व्यक्त करती हैं। कवियत्री की कलम से निकली 'छोटी सी गुड़िया', 'पहाड़ की औरत', 'स्त्री...एक गणित', 'स्त्री का संघर्ष' और 'कुछ कहना चाहती हूं' कविताएं नारी मन की कोमलता के साथ–साथ नारी शक्ति की सशक्त अभिव्यक्ति है।

'लॉक डाउन का अनुभव', 'उम्मीद की किरण', 'मेरा भारत', 'इंसानियत', 'खुद को जरा संभालो' मर्मस्पर्शी रचनाएं हैं। इसके अलावा भी डॉ.विनीता चौधरी ने अन्य कविताओं के माध्यम से जीवन के विभिन्न रंगों को अपनी लेखनी से सहजता के साथ कागज पर उतारा है।

प्रस्तुति – प्रो. (डॉ.) के. एल.तलवाड़

श्रद्धा और रोमांच का संगम
गुरुद्वारा श्री हेमकुंड साहिब जी की यात्रा

हेमकुंड साहिब, जिसे गुरुद्वारा श्री हेमकुंड साहिब जी के नाम से भी जाना जाता है, सिख धर्म के सबसे पवित्र और श्रद्धेय तीर्थ स्थलों में से एक है। उत्तराखंड के चमोली जिले में हिमालय की ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित यह पवित्र धाम समुद्र तल से लगभग 4,329 मीटर की ऊँचाई पर अवस्थित है। निर्मल और शांत हेमकुंड झील के तट पर बना यह गुरुद्वारा प्रकृति और अध्यात्म का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है। चारों ओर फैली बर्फ से आच्छादित पर्वत चोटियाँ इसकी दिव्यता और सौंदर्य को और अधिक आकर्षक बना देती हैं। यहाँ का मनोहारी वातावरण श्रद्धालुओं, पर्यटकों तथा ट्रेकिंग प्रेमियों को अपनी ओर सहज ही आकर्षित कर लेता है। सिख धर्म की पवित्र वाणी में उल्लेख मिलता है कि सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने पूर्व जन्म में हेमकुंड झील के शांत तट पर कठोर तपस्या और गहन ध्यान किया था।

यही कारण है कि यह स्थान सिख श्रद्धालुओं के लिए अत्यंत आस्था और श्रद्धा का केंद्र माना जाता है। प्रत्येक वर्ष हजारों श्रद्धालु कठिन पर्वतीय यात्रा तय करके यहाँ पहुँचते हैं और गुरु के प्रति अपनी भक्ति एवं श्रद्धा अर्पित करते हैं। इस वर्ष की यह यात्रा 23 मई से प्रारंभ हो गई है। हेमकुंड साहिब

केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि अपने अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य के कारण भी विश्वभर में प्रसिद्ध है। यहाँ तक पहुँचने का मार्ग अत्यंत रोमांचकारी और मनमोहक है। ऊँचे–ऊँचे पर्वत, कल–कल बहते झरने, हरे–भरे वन और शीतल वातावरण यात्रियों के मन को आनंद और शांति से भर देते हैं। इसी मार्ग से विश्वप्रसिद्ध 'फूलों की घाटी' अर्थात् वैली ऑफ फ्लावर्स नेशनल पार्क, भी पहुँचा जाता है, जिसके कारण यह स्थान प्रकृति प्रेमियों और ट्रेकर्स के बीच विशेष लोकप्रिय है। हेमकुंड झील से 'हिमगंगा' नामक एक छोटी नदी निकलती है, जो इस क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता में चार चाँद लगा देती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान श्रीराम के छोटे भाई लक्ष्मण जी ने रामायण युद्ध में गंभीर रूप से घायल होने के पश्चात हेमकुंड के तट पर तपस्या और ध्यान करके पुनः स्वास्थ्य प्राप्त किया था। कहा जाता है कि जिस स्थान पर लक्ष्मण जी ने ध्यान किया था, वहीं आज लक्ष्मण मंदिर स्थित है। इस प्रकार यह स्थान सिख और हिंदू दोनों धर्मों के लोगों के लिए समान रूप से श्रद्धा और आस्था का प्रतीक बन गया है। सर्दियों के मौसम में यह संपूर्ण क्षेत्र बर्फ की मोटी चादर से ढक जाता है, जिसके कारण गुरुद्वारा कुछ समय के लिए बंद कर दिया जाता है। प्रत्येक वर्ष ग्रीष्म ऋतु में बर्फ पिघलने के बाद हेमकुंड साहिब यात्रा पुनः आरंभ होती है। इस पावन यात्रा में देश–विदेश से बड़ी संख्या में श्रद्धालु सम्मिलित होते हैं। गुरुद्वारे में गूँजती गुरुबाणी, शांत वातावरण और प्रकृति की अनुपम छटा मन को अद्भुत शांति और आध्यात्मिक आनंद प्रदान करती है। हेमकुंड साहिब आस्था, तपस्या, साहस और प्राकृतिक सौंदर्य का अनुपम प्रतीक है।

यह पवित्र स्थल मानवता, सेवा, आध्यात्मिकता और प्रकृति–प्रेम का संदेश देता है तथा प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में श्रद्धा और शांति का संचार करता है। इस 26 जून तक श्री हेमकुंड साहिब की यात्रा करने लगभग एक लाख बयालिस हजार श्रद्धालु पहुंच चुके हैं।

प्रस्तुति – डॉ. मदन लाल शर्मा,
असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
कर्णप्रयाग, (चमोली)

दून विश्वविद्यालय के 75 से अधिक छात्रों का हुआ कैंपस प्लेसमेंट

प्रो० सुरेखा डंगवाल, कुलपति

दून यूनिवर्सिटी ने एक बार फिर यह साबित किया है कि राज्य विश्वविद्यालय भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आधुनिक कौशल विकास और बेहतर रोजगार अवसरों के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर अपनी मजबूत पहचान बना सकते हैं। वर्तमान शैक्षणिक सत्र में विश्वविद्यालय के 75 से अधिक छात्रों का चयन प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय कंपनियों और देश के प्रमुख संस्थानों में हुआ है। पिछले दिनों आयोजित प्लेसमेंट माह के दौरान यह उपलब्धि हासिल हुई। प्रबंधन, कंप्यूटर साइंस, विदेशी भाषा अध्ययन और सामाजिक विज्ञान जैसे विभिन्न विभागों के छात्रों ने इस प्लेसमेंट ड्राइव में उत्साहपूर्वक भाग लिया। विश्वविद्यालय द्वारा औद्योगिक संवाद (Industrial Interactions), कार्यशालाएं, प्रशिक्षण गतिविधियां, योग्यता प्रशिक्षण (Aptitude Training), संचार कौशल विकास और व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं। इस अवसर पर दून यूनिवर्सिटी की कुलपति प्रो. सुरेखा डंगवाल ने कहा कि छात्रों के सफल प्लेसमेंट विश्वविद्यालय की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल हैं। उन्होंने बताया कि प्रत्येक विभाग छात्रों को उद्योग की आवश्यकताओं के अनुसार रोजगार–उन्मुख कौशल प्रदान करने पर लगातार कार्य कर रहा है। विश्वविद्यालय लंबे समय से परिणाम–आधारित शिक्षा प्रणाली (Outcome-based Education) पर कार्य कर रहा है, जिसमें केवल सैद्धांतिक शिक्षा ही नहीं बल्कि औद्योगिक तैयारी, प्रशिक्षण गतिविधियां, व्यावसायिक कौशल, व्यक्तित्व विकास और रोजगार–उन्मुख प्रशिक्षण पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। इसी कारण विश्वविद्यालय के छात्र राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कंपनियों में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। उन्होंने प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल तथा विभिन्न विभागाध्यक्षों की सराहना करते हुए कहा कि उनके समन्वित प्रयासों के कारण छात्रों को बेहतर रोजगार अवसर मिल रहे हैं। विश्वविद्यालय उद्योगों के साथ अपने संबंध लगातार मजबूत कर रहा है, ताकि छात्रों को अधिकतम रोजगार

अवसर मिल सकें। प्लेसमेंट ड्राइव अभी भी जारी है, और आने वाले दिनों में कई प्रतिष्ठित कंपनियों के शामिल होने की संभावना है। इस वर्ष चयन की संख्या और बढ़ने की उम्मीद है। इस वर्ष सबसे अधिक वेतन पैकेज वैश्विक तकनीकी और परामर्श कंपनी Accenture और JARO Education से मिले। जापानी अध्ययन विभाग की छात्रा श्रुति का चयन Accenture में हुआ, जबकि रिधिमा जुयाल को JARO Education से 14 लाख रुपये वार्षिक पैकेज का आकर्षक प्रस्ताव मिला।

फ्रेंच विभाग की छात्रा हर्षिता अग्रवाल का चयन Datamark में 8 लाख रुपये वार्षिक पैकेज पर हुआ। वहीं MBA छात्र ऋषभ सक्सेना और ईशा शर्मा, तथा MTech छात्र बिपिन जोशी को PIE Infotech से आकर्षक ऑफर प्राप्त हुए। ठैब कंप्यूटर साइंस के छात्र मनप्रीत सिंह को भी उसी कंपनी से 6 लाख रुपये वार्षिक पैकेज मिला।

इस प्लेसमेंट अभियान में कई प्रतिष्ठित कंपनियों और संस्थानों ने सक्रिय भागीदारी की, जिनमें। Amazon, Grant Thornton Bharat, Azim Premji Foundation, Mahindra Group, ICICI Bank, Smart Data Enterprises और Posterity Consulting शामिल हैं।

प्रस्तुति - प्रो. (डॉ.) के. एल.तलवाड़

विरासत

लोक संस्कृति सांस्कृतिक महोत्सव में बोले मुख्यमंत्री 'जौनसार के रासो की थाप, हारुल की गूंज व बांद करती है गौरवान्वित'

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने 8 जून को स्वतंत्रता संग्राम सेनानी केदार सिंह स्टेडियम नागथात देहरादून में आयोजित जौनसार बावर लोक संस्कृति सांस्कृतिक महोत्सव एवं क्रीड़ा समारोह–2026 में प्रतिभाग किया। मुख्यमंत्री ने श्री महासू देवता को नमन करते हुए कहा कि जौनसार–बावर सांस्कृतिक पुनरूत्थान समिति पिछले 33 वर्षों से इस उत्सव के माध्यम से धरोहर को संरक्षित करने का कार्य कर रही है। जौनसार–बावर को प्राकृतिक सुंदरता के साथ अपनी मेहनतकश, सरल और स्वाभिमानी जनता के लिए जाना जाता है। यहां की लोक संस्कृति,एकता की भावना को बढ़ावा एवं भविष्य की पीढ़ियों को अपनी संस्कृति से जुड़े रहने की प्रेरणा देती है। जौनसार– बावर में उन्हें उत्तराखंड की मूल आत्मा के साक्षात दर्शन होते हैं। यहां की संस्कृति,परंपराएं, सरलता, आत्मीयता और प्रकृति के प्रति सम्मान, राज्य की समृद्ध विरासत हैं। जौनसार के रासो की थाप, हारुल की गूंज और बांद जैसी अद्भुत परंपराएं उत्तराखंड के साथ पूरे देश का गौरव है। राज्य सरकार ने उत्तराखंड जनजातीय महोत्सव के माध्यम से संस्कृति व विरासत को एक मंच देने का प्रयास किया है।

प्रस्तुति–
प्रो. जानकी पंवार,
सेवानिवृत्त प्राचार्य, सदस्य सलाहकार मंडल
साईं सृजन पटल

महायोगी गुरू गोरखनाथ गवर्नमेंट पीजी कॉलेज
अभिमुखीकरण एवं संवेदीकरण कार्यक्रम

मई माह में यूजीसी मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय एवं महायोगी गुरु गोरखनाथ राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिथ्याणी यमकेश्वर (गढ़वाल) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित आठ दिवसीय NEP-2020 अभिमुखीकरण एवं संवेदनशीलता कार्यक्रम ने इस तथ्य को पुनः रेखांकित किया कि शिक्षा सुधार केवल सरकारी दस्तावेजों से नहीं, बल्कि शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी और जागरूकता से संभव होते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक वैश्विक आवश्यकताओं के साथ जोड़ने का प्रयास करती है। कार्यक्रम के विभिन्न सत्रों में भारतीय शिक्षा पद्धति, वेदों और उपनिषदों की ज्ञान परंपरा, समग्र स्वास्थ्य, पर्यावरण चेतना तथा बहुविषयक शिक्षा जैसे विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई। यह स्पष्ट किया गया कि भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि भविष्य के निर्माण की भी आधारशिला है।

आज जब दुनिया कौशल, नवाचार और रचनात्मकता को महत्व दे रही है, तब भारतीय शिक्षा को अपनी जड़ों से जोड़ते हुए आगे बढ़ाना समय की मांग है। NEP-2020 इसी दिशा में एक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। किसी भी शिक्षा नीति की सफलता उसके क्रियान्वयन पर निर्भर करती है और क्रियान्वयन का सबसे महत्वपूर्ण आधार शिक्षक होते हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों के विशेषज्ञों ने शिक्षकों को अकादमिक नेतृत्व, परिणाम आधारित शिक्षा , समावेशी शिक्षा, कौशल विकास तथा शैक्षिक प्रशासन जैसे महत्वपूर्ण विषयों से परिचित कराया। 21वीं सदी की चुनौतियाँ किसी एक विषय की सीमाओं में नहीं सिमटी हैं। जलवायु परिवर्तन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय और आर्थिक विकास जैसे प्रश्न बहुविषयक दृष्टिकोण की मांग करते हैं। NEP-2020 विद्यार्थियों को विषयों की कठोर सीमाओं से मुक्त कर व्यापक अध्ययन के अवसर प्रदान करती है। इस कार्यक्रम में भी बहुविषयक शिक्षा पर विशेष बल दिया गया। विशेषज्ञों ने बताया कि विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, साहित्य, तकनीक और कौशल शिक्षा का समन्वय ही विद्यार्थियों को भविष्य के लिए तैयार कर सकता है। यही दृष्टिकोण भारत को वैश्विक ज्ञान अर्थव्यवस्था में

सशक्त स्थान दिला सकता है। नई शिक्षा नीति का एक महत्वपूर्ण पक्ष शिक्षा को अधिक समावेशी और रोजगारोन्मुख बनाना है। विविध सामाजिक पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करना तथा उन्हें व्यावहारिक कौशलों से लैस करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। कार्यक्रम में इस विषय पर हुए विमर्श ने यह स्पष्ट किया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि भारत को वैश्विक ज्ञान नेतृत्व की ओर भी अग्रसर करेगी।आठ दिवसीय (19 से 27 मई) यह अभिमुखीकरण एवं संवेदनशीलता कार्यक्रम केवल एक प्रशिक्षण आयोजन नहीं था, बल्कि शिक्षा के भविष्य पर गंभीर चिंतन का मंच भी था। सात राज्यों के प्रतिभागियों और देश के प्रतिष्ठित शिक्षाविदों की सहभागिता ने यह संदेश दिया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 केवल एक नीति दस्तावेज नहीं, बल्कि भारत को ज्ञान–आधारित, आत्मनिर्भर और नवाचारी राष्ट्र बनाने का संकल्प है।

प्रस्तुति - प्रो. (डॉ.) के. एल.तलवाड़

राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण - अल्मोड़ा

'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत कौशल विकास

डॉ.प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय , भिकियासैण, अल्मोड़ा में प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना के मार्गदर्शन में नवाचार समिति प्रभारी डॉ. इला बिष्ट द्वारा थीम 'वोकल फॉर लोकल' अभियान हेतु एक टीम का गठन किया गया। अभियान के अंतर्गत महाविद्यालय की छात्र–छात्राओं के साथ स्थानीय लोगों को भी जोड़ा गया। जिसका उद्देश्य स्थानीय उत्पादन एवं उद्योगों का प्रोत्साहन ,स्वरोजगार हेतु प्रेरणा, कौशल विकसित करना ,कौशल सीखना एवं कौशल प्रदान करना , रचनात्मक एवं सृजनात्मक शक्ति का विकास करना, विद्यार्थियों एवं स्थानीय लोगों में कौशल विकास, आत्मनिर्भरता एवं जीविकोपार्जन की संभावनाओं को प्रबल करना, आय सृजन के अवसर प्रदान करना, उद्यमिता को बढ़ावा देना एवं ग्रामीण क्षेत्र से हो रहे पलायन को रोकना, कुमांऊनी लोक कला ऐपण को नई पीढ़ी और नए उत्पादों के जरिए जीवित रखना, स्थानीय लोगों को जोड़ना एवं पर्यावरण हितैषी वस्तुओं के निर्माण एवं उपयोग को बढ़ावा देना तथा पर्यावरण संरक्षण में सहयोग करना है। उक्त कार्यक्रम के अंतर्गत चार छात्राओं के समूह द्वारा ऐपण हस्तकला को प्रदर्शित करते हुए पांच सूती लिनन बैग्स के प्रथम बैच का शुभारंभ किया गया। महाविद्यालय एवं Pelag फाउंडेशन, अल्मोड़ा के मध्य MoU की प्रक्रिया गतिमान है, जिसके माध्यम से फाउंडेशन द्वारा समय–समय पर छात्राओं एवं स्थानीय लोगों को ऐपण हस्तकला पर अपेक्षित मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। जिससे इस कार्य को विस्तारित करने में मदद मिलेगी।

उक्त हस्तकला से निर्मित वस्तुओं एवं सामग्री का प्रदर्शन महाविद्यालय स्तर पर आयोजित होने वाली प्रदर्शनी एवं अन्य विभिन्न स्तरों पर आयोजित होने वाली प्रदर्शनियों में भी किया जाएगा। नवाचार प्रभारी डॉ. इला बिष्ट ने बताया कि छात्राओं एवं स्थानीय लोगों द्वारा निर्मित उत्पादों के बाजारीकरण हेतु अपेक्षित कार्य किए जाएंगे , जिसके माध्यम से उत्पादों को बिक्री के लिए बाजार उपलब्ध कराया जाएगा।

प्रस्तुति : श्रीमती नीलम तलवाड़

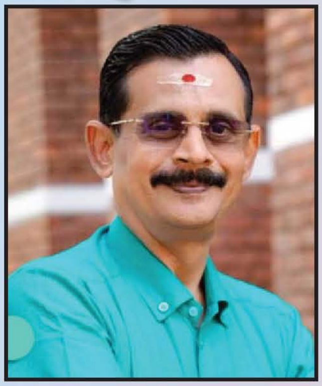

डॉ. कन्नन सीएस वारियर को स्प्रिंगर नेचर का 'एडिटर ऑफ डिस्टिंक्शन अवॉर्ड 2026'

केरल वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक एवं वर्तमान में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून में मुख्य वैज्ञानिक के रूप में प्रतिनियुक्ति पर कार्यरत डॉ. कन्नन सीएस वारियर को स्प्रिंगर नेचर द्वारा 'एडिटर ऑफ डिस्टिंक्शन अवॉर्ड 2026' से सम्मानित किया गया है। स्प्रिंगर नेचर विश्व के सबसे बड़े और प्रतिष्ठित वैज्ञानिक, तकनीकी तथा चिकित्सा प्रकाशकों में से एक है, जो शोध और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध है। यह पुरस्कार उन संपादकों के कठोर परिश्रम, समर्पण और नेतृत्व को सम्मानित करता है जिन्होंने किसी जर्नल की गुणवत्ता और मानकों को ऊँचा उठाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया हो। डॉ. वारियर वर्तमान में स्प्रिंगर नेचर द्वारा प्रकाशित 'एग्रोफॉरेस्ट्री सिस्टम्स' नामक शोध पत्रिका में एसोसिएट एडिटर के रूप में कार्यरत हैं। यह पत्रिका वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में विश्व की शीर्ष 10 पत्रिकाओं में शामिल है।

इस पत्रिका के 32 देशों से 66 संपादक हैं, जिनमें से केवल 5 भारत से हैं। डॉ. वारियर को दो राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके हैं। उन्हें वानिकी में उत्कृष्ट अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किया गया था, जिसमें उन्होंने कैसुआरिना (Casuarina) की तीन लवण–सहिष्णु किस्मों के विकास में अग्रणी शोध किया था। इसके अतिरिक्त उन्हें रोला एस. राव राष्ट्रीय पुरस्कार भारत में जैव विविधता संरक्षण पर उत्कृष्ट शोध (विशेष रूप से केरल के अलाप्पुझा जिले के पवित्र उपवनों पर व्यापक अध्ययन) के लिए प्रदान किया गया।

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा वैज्ञानिकों के लिए मान्यता प्राप्त VIDWAN डेटाबेस में उनका VIDWAN स्कोर 10/10 है। यह स्कोर वानिकी क्षेत्र में तीन दशकों से अधिक समय तक दिए गए उनके असाधारण योगदान के आधार पर प्रदान किया गया है। उनके नाम भारत में वानिकी क्षेत्र के केवल 17 प्रतिष्ठित पेटेंटों में से एक पेटेंट भी दर्ज है। पर्यावरण जागरूकता के लिए छात्रों को अनेक व्याख्यान देने के अलावा, डॉ. वारियर ने संगीत के माध्यम से भी पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया है। उन्होंने केरल वन विभाग के आधिकारिक थीम गीत 'कदारिवु' (जिसे प्रसिद्ध गायक स्वर्गीय पी. जयचंद्रन ने 2020 में गाया),'वनानीरु' (2025) तथा 'प्रकृति वंदनम' (यजुर्वेद पर आधारित, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के लिए) की रचना की है। उन्होंने यूट्यूब पर संगीत और गायन से संबंधित 160 से अधिक गीत भी जारी किए है।

प्रस्तुति : अमन तलवाड़, सह संपादक

पृष्ठ 3 का शेष भाग... ...माँ सुरकण्डा देवी मंदिर

पैदल दूरी तय कर लाते हैं। जड़धारी वंश मां की भेंट व चढ़ावे आदि का हकदार नही है। नवरात्र पूर्ण होने पर माँ को पुनः सुरकुट पर्वत स्थित मंदिर में अत्यंत भावुक वातावरण में विदा किया जाता है। यह परंपरा सदियों से चली आ रही है और उत्तराखण्ड की लोकसंस्कृति का अद्वितीय उदाहरण है। 51 शक्तिपीठों में एक सिद्धपीठ श्री सुरकण्डा देवी मन्दिर में माता का प्राचीन स्वरूप शिला के रूप में विद्यमान है। माता की पूजा वर्ष भर इसी मन्दिर में सम्पन्न होती है। पुजारियों के ग्राम पुजाल्डी, पट्टी बमुण्ड, विकास खण्ड चम्बा, जिला टिहरी गढवाल में माता श्री सुरकण्डा देवी प्राचीन शिला रूप मे विद्यमान है।

प्राचीन काल में जब संसाधनों का अभाव था और शीतकाल में अत्यधिक बर्फवारी होती थी, तब माता सुरकण्डा की पूजा 6 माह पुजारियों के गाँव पुजाल्डी पट्टी बमुण्ड, में होती थी। पुजाल्डी गांव के लेखवार जाति के ब्राह्मण माँ के पुजारी हैं। वे आदिकाल से मां की पूजा–अर्चना का कार्य करते आ रहे हैं और मालकोट के लोग देवी के मामा कहलाते हैं।

सुरकण्डा देवी मंदिर की एक और विशेषता यह है कि यह संभवतः एकमात्र ऐसा शक्तिपीठ है जहाँ गंगा दशहरा पर्व अत्यंत श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जाता है। इसके अतिरिक्त चैत्र एवं शारदीय नवरात्र, अष्टमी, नवमी, पूर्णिमा और अमावस्या के अवसर पर यहाँ विशाल संख्या में श्रद्धालु पहुँचते हैं।

प्रस्तुति – अंकित तिवारी,उप संपादक

ऋषिकेश- कर्णप्रयाग ब्रॉड गेज रेल परियोजना में
देश की सबसे लंबी रेल सुरंग देवप्रयाग से जनासू

■ डॉ. रमेश चन्द्र भट्ट

भारत सरकार की ऋषिकेश– कर्णप्रयाग रेल परियोजना (125 किमी) चार धाम यात्रा को सुगम बनाने और कनेक्टिविटी बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। पहले चरण में परियोजना को दिसंबर 2028 तक पूरा करने का लक्ष्य है। द्वितीय चरण 2029 तक कर्णप्रयाग तक रेल पहुंचाने का लक्ष्य है। इस परियोजना में 17 सुरंगें (100 किमी से अधिक) और 35 पुल हैं। ऋषिकेश से कर्णप्रयाग तक लगभग 125 किमी की इस परियोजना में लगभग 104 किमी (83 प्रतिशत) लंबाई सुरंगो की हैं। जिसमे 16 मुख्य सुरंगें, 12 निकास सुरंग। गहरी घाटियों और नदियों पर बने 19 प्रमुख और 31 छोटे पुल शामिल हैं। परियोजना का सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन कर्णप्रयाग हैं। यहां 26 लाईन बिछाई जाएंगी, इसे टर्मिनल के रूप मे विकसित किया जायेगा। परियोजना जो देहरादून, टिहरी, पौड़ी, रुद्रप्रयाग, और चमोली जिलों से होकर गुजरेगी। जिसमें 13 स्टेशन का नेटवर्क– योग नगरी ऋषिकेश, मुनि की रेती शिवपुरी, ब्यासी, देवप्रयाग, जनासू मलेथा श्रीनगर, (चौरास), धारी देवी , रुद्रप्रयाग (सुमेरपुर) घोलतीर, गौचर एंव अंतिम स्टेशन कर्णप्रयाग (सिवाई) शामिल है।

इस परियोजना के तहत बनी टनल संख्या 8 अब देश की सबसे लंबी सुरंग बन गई है। करीब 14 .58 किलोमीटर लम्बी यह सुरंग देवप्रयाग और जनासू के बीच तैयार की जा रही है और पूरे 125 किमी रेल प्रोजेक्ट की रीढ़ मानी जा रही है।

इस परियोजना का निर्माण कार्य रेल विकास निगम लिमिटेड (RVNL) द्वारा किया जा रहा है। खास बात यह है कि पूरी रेल लाइन का लगभग 84 प्रतिशत मार्ग सुरंगों के भीतर विकसित किया जा रहा है, जिसमें हिमालयी पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए मजबूत और टिकाऊ आधार तैयार किया जा रहा है। टनल – 8 के निर्माण मे अत्याधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल किया गया है। मजबूत चट्टानों में खुदाई के लिए टनल बोरिंग मशीन (TBM) का उपयोग किया गया, जबकि जटिल और कमजोर भू– भाग में न्यू ऑस्ट्रेलियन टनलिंग तकनीक (NATM) अपनाई गई। सुरंग के भीतर डबल

....शेष पृष्ठ : 28 पर

'दीदी की लाइब्रेरी' सीमांत क्षेत्रों के युवाओं के सपनों को नई उड़ान

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा खटीमा विकासखंड कार्यालय परिसर में ₹ 55 लाख की लागत से निर्मित आधुनिक "दीदी की लाइब्रेरी" का लोकार्पण केवल एक पुस्तकालय का उद्घाटन नहीं, बल्कि शिक्षा, युवा सशक्तिकरण और सामाजिक विकास की दिशा में एक दूरदर्शी पहल है। यह पहल विशेष रूप से उन ग्रामीण और सीमांत क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए आशा की नई किरण बनकर सामने आई है, जो अब तक संसाधनों की कमी के कारण गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सुविधाओं से वंचित रहे हैं। आज प्रतियोगी परीक्षाओं का दौर केवल प्रतिभा का नहीं, बल्कि बेहतर अध्ययन वातावरण और उचित संसाधनों का भी है।

बड़े शहरों में उपलब्ध लाइब्रेरी, अध्ययन सामग्री और शांत वातावरण ग्रामीण युवाओं को अक्सर नहीं मिल पाता, जिसके कारण अनेक प्रतिभाएं अपनी पूरी क्षमता तक नहीं पहुंच पातीं। ऐसे समय में खटीमा विकासखंड परिसर में स्थापित "दीदी की लाइब्रेरी" विद्यार्थियों और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए ज्ञान का महत्वपूर्ण केंद्र साबित हो सकती है।

मुख्यमंत्री ने सही कहा कि यह पुस्तकालय केवल किताबों का संग्रह नहीं, बल्कि युवाओं के सपनों को साकार करने का एक सशक्त माध्यम बनेगा। आधुनिक सुविधाओं से युक्त यह लाइब्रेरी छात्रों को ऐसा अध्ययन वातावरण प्रदान करेगी, जहां वे अपने लक्ष्य निर्धारित कर बेहतर तैयारी कर सकेंगे। यहां उपलब्ध पुस्तकों और अध्ययन सामग्री से युवाओं को प्रतियोगी परीक्षाओं, उच्च शिक्षा और अन्य शैक्षणिक अवसरों के लिए स्वयं को तैयार करने में सहायता मिलेगी। इस पहल का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष महिला सशक्तिकरण से भी जुड़ा हुआ है। सरकार द्वारा इस लाइब्रेरी का संचालन स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को सौंपना एक सकारात्मक और प्रेरणादायक कदम है। इससे न केवल महिलाओं की आय में वृद्धि होगी, बल्कि वे सामाजिक और शैक्षणिक परिवर्तन की भागीदार भी बनेंगी। यह मॉडल आत्मनिर्भरता और सामाजिक सहभागिता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

राज्य सरकार लगातार शिक्षा, युवा विकास और स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए कार्य कर रही है। "दीदी की लाइब्रेरी" जैसी पहलें इस सोच को जमीन पर उतारने का कार्य करती हैं। यदि प्रदेश के अन्य ग्रामीण और सीमांत क्षेत्रों में भी इस प्रकार की आधुनिक लाइब्रेरी स्थापित की जाएं, तो निश्चित रूप से उत्तराखंड का युवा वर्ग नए आत्मविश्वास और ऊर्जा के साथ आगे बढ़ सकेगा।

आज आवश्यकता केवल भवन निर्माण की नहीं, बल्कि ऐसे ज्ञान केंद्रों की है जो युवाओं को दिशा, प्रेरणा और अवसर प्रदान करें। खटीमा की "दीदी की लाइब्रेरी" इसी सोच का जीवंत उदाहरण बनकर उभरी है। जहां किताबों के साथ–साथ सपनों को भी नया आसमान मिलेगा।

प्रस्तुति – अंकित तिवारी, उप संपादक

विवाहित बहन - बेटियों का मायके में स्वागत

ध्याणी मिलन समारोह : उत्तराखंड की सांस्कृतिक विरासत

पहाड़ में 'ध्याणी' (विवाहित बेटी) का अपने मायके (मैत) और ईष्ट देवता से बहुत गहरा और भावनात्मक जुड़ाव होता है। हाल ही में जनपद उत्तरकाशी के मोरी विकास खंड के सालरा गांव में यह परंपरा अपने सबसे खूबसूरत रूप में तब जीवंत हो उठी,जब गांव की ध्याणियों ने एक साथ अपने ईष्ट कौल केदारी महाराज को 'सोने–चांदी का डोरिया' (देवता का प्रतीक) अर्पित किया। जब ध्याणियां अपने मायके की देहरी पर कदम रखती हैं,तो उनकी आंखों में बचपन की यादें और देवता के प्रति अगाध श्रद्धा होती है। यह सोने–चांदी का डोरिया केवल धातु का आभूषण नहीं है,बल्कि यह उन ध्याणियों के अटूट विश्वास, प्रेम और वचनों (कौल) का प्रतीक है। ध्याणियों द्वारा अर्पित यह डोरिया इस बात का प्रमाण है कि बेटियां चाहे जहां भी रहें,उनकी आत्मा अपने मायके के देवता के चरणों में बसती है। उत्तराखंड की शांत वादियों में जब भी 'ध्याणी मिलन' का शंखनाद होता है, तो पहाड़ का दर्रा–दर्रा मुस्कुरा उठता है। हमारी लोक संस्कृति में 'ध्याणी' उन विवाहित बेटियों और बहनों को कहा जाता है,जो ब्याह कर अपने ससुराल तो चली गईं, लेकिन जिनका दिल आज भी 'मैत'(मायके) की उसी चौखट पर धड़कता है।

ध्याणी मिलन महज एक आयोजन नहीं,यह यादों के झरोखों को फिर से खोलने,अपनी संस्कृति को सहेजने और उन बेटियों को यह एहसास दिलाने का उत्सव है कि वे आज भी इस आंगन की उतनी ही मालकिन हैं,जितनी विवाह से पहले थी। 'ध्याणी मिलन' समारोह का मुख्य उद्देश्य प्रवासी और स्थानीय विवाहित महिलाओं को एक मंच पर लाना,उनके अधिकारों व सम्मान को रेखांकित करना और नई पीढ़ी को अपनी लोक संस्कृति से रूबरू कराना है। यह हमारी दादियों, माताओं और बहनों के चेहरे पर वो सुकून वाली मुस्कान लाता है,जो शहरों की चकाचौंध में कहीं खो गई थी। इस मिलन में उम्र का कोई बंधन नहीं होता,छोटी–छोटी लड़कियों से लेकर बुजुर्ग महिलाएं तक सभी उत्साह से इसमें प्रतिभाग करती हैं। गांव की बहुओं सहित समस्त ग्रामवासी अपनी ध्याणियों का पलक – पांवड़े बिछाकर स्वागत करते हैं। इस कार्यक्रम का सबसे मार्मिक और सकारात्मक पहलू उन ध्याणियों का आगमन है जिन्हें लोक भाषा में 'निमैती' कहा जाता है – यानी वे माताएं – बहनें, जिनके मायके में अब बुलाने वाला कोई सगा नहीं बचा है। ध्याणी मिलन के इस अवसर पर जब पूरा गांव उनका मायका बन जाता है और उन्हें अपार स्नेह मिलता है, तो उनकी आंखों में खुशी के आंसू छलक पड़ते हैं। टिहरी जनपद के जौनपुर अंचल स्थित खेराड़ गांव से उपजी यह एक छोटी सी भावपूर्ण पहल,आज एक वृहद सांस्कृतिक परंपरा में तब्दील हो रही है। यह समारोह इस बात का प्रमाण है कि भले ही समय बदल जाये,लेकिन देवभूमि में 'ध्याणी' और 'मैत' का पवित्र बंधन युगों – युगों तक यूं ही अटूट रहेगा।

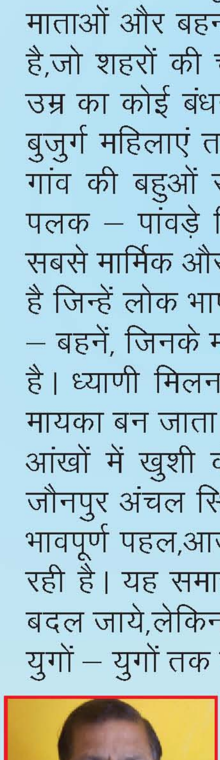

प्रस्तुति –
डॉ.चन्द्रभूषण बिजल्वाण, साहित्यकार,
सदस्य सलाहकार मंडल, साईं सृजन पटल

चीड़ की सूखी पत्तियों को रोजगार व पर्यावरण संरक्षण से जोड़ने वाली 'पिरुल वुमेन' मंजू आर. साह को मिला 'गौरा देवी सम्मान'

श्रीमती मंजू आर. साह आज किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। उन्होंने उत्तराखंड के जंगलों में आग का कारण बनने वाले चीड़ के सूखे पत्तों (पिरुल) को आजीविका और पर्यावरण संरक्षण का सशक्त माध्यम बना दिया है। उनके अभिनव प्रयासों ने न केवल महिलाओं को रोजगार से जोड़ा है, बल्कि जंगलों को आग से बचाने की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 'साई सृजन पटल' के अक्टूबर 2024 अंक में उनके कृतित्व पर डॉ. विनीता चौधरी का लेख 'पिरुल के कलात्मक कौशल द्वारा आजीविका संवर्द्धन के साधनों का विकास कर रही हैं – मंजू आर. साह' प्रकाशित हुआ था। इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर वे जनपद चमोली में 'गौरा देवी पुरस्कार' से सम्मानित हुई हैं जो अत्यंत गौरव का विषय है। पुरस्कार प्राप्ति के बाद लेखिका श्रीमती नीलम तलवाड़ ने उन्हें इस उपलब्धि पर शुभकामनाएं दी। यहां प्रस्तुत हैं उनसे बातचीत के कुछ प्रमुख अंश ....

नीलम तलवाड़ –पिरूल जैसी वस्तु को उपयोगी बनाने का विचार आपके मन में कैसे आया ?

मंजू साह – बचपन से ही अनुपयोगी वस्तुओं का प्रयोग कर सजावटी सामान बनाने का शौक था। जैसे टूटी हुई चूड़ियों से माला, टॉफी की प्लास्टिक से माला ,कपड़े की कतरन से वॉल हैंगिंग आदि। एक बार मैंने गेहूं की नलियों से बनी टोकरी देखी, तब विचार आया कि इसका कोई स्थानीय विकल्प भी हो सकता है। इसी दौरान मैंने जंगलों में आग लगते हुए देखा। तब मन में विचार आया कि जिस पिरुल को हम जंगलों के लिए समस्या मानते हैं, उसे यदि उपयोगी बनाया जाए तो यह पर्यावरण और आजीविका दोनों के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकता है। यही सोच मेरे इस सफर की शुरुआत बनी।

प्रश्न – पिरूल का उपयोग करते समय आपको किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा ?

उत्तर– शुरुआती दौर आसान नहीं था। लोग अक्सर मेरा मजाक उड़ाते थे और कहते थे कि 'कूड़ा–कबाड़ इकट्ठा कर रही हो, इसे कौन खरीदेगा ?' काम करते समय कई बार सुई चुभ जाती थी, हाथों में चोट लग जाती थी। कभी–कभी तैयार हो रही डिजाइन बिगड़ जाती थी और पूरा काम दोबारा शुरू करना पड़ता था। लेकिन मैंने इन कठिनाइयों को सीखने की प्रक्रिया माना और निरंतर प्रयास करती रही। आज वही पिरुल लोगों के लिए उपयोगी उत्पादों का आधार बन चुका है।

प्रश्न – गौरा देवी सम्मान पाने पर आपको कैसा अनुभव हो रहा है ?

उत्तर – गौरादेवी सम्मान को स्वीकार करते हुए हृदय कृतज्ञता और भावुकता से भरा हुआ था। उत्तराखंड की पावन भूमि पर पर्यावरण चेतना की अलख जगाने वाली माँ गौरादेवी के नाम से जुड़ा पुरस्कार पाना किसी भी शिल्पकार के लिए जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है। पिरूल, जिसे कभी हम जंगलों के लिए एक समस्या मानते थे, उसे कला और आजीविका का माध्यम बनाने के मेरे इस सफर को जो मान मिला, उसने मेरी आँखों को सजल और हौसलों को बुलन्द कर दिया। यह सम्मान सिर्फ मेरा नहीं है, बल्कि यह उन तमाम पहाड़ों, चीड़ के वृक्षों और उन सभी हाथों का सम्मान है, जो दिन–रात इस माटी की सेवा में जुटे हैं। जब भी समाज हमारे इस छोटे से प्रयास को सराहता है, तो लगता है कि माँ गौरादेवी का आशीष हम पर बरस रहा है। यह सम्मान मुझे जीवनभर पर्यावरण और पारंपरिक शिल्प के प्रति समर्पित रहने की ऊर्जा देता रहेगा।

प्रश्न – आप पिरूल के उपयोग के बारे में आज की युवा पीढ़ी को क्या सलाह देंगी और अपनी इस उपलब्धि को किस प्रकार साझा करना चाहेंगी ?

उत्तर – जब गर्मियों में हमारे पहाड़ों से चीड़ के सूखे पत्तों यानी पिरुल की सोंधी महक आनी चाहिए थी, तब वहां से केवल बेजुबान जानवरों के जलने और अपनों के आशियाने उजड़ने की बदबू आ रही है। हमारे हरे–भरे पहाड़ आज पिरुल की सूखी सेज पर बिछे बारूद के ढेर बन चुके हैं। पिरुल को सिर्फ दुश्मन न समझें। अगर हम समझदारी दिखाएं, तो इस सूखी पत्ती से अपने पहाड़ों को रोजगार और सुरक्षा दोनों दे सकते हैं। पिरुल से आज बेहतरीन हस्तशिल्प (चटाई, टोकरियाँ, गमले), कोयला (Charcoal Briquettes) और बिजली बनाई जा रही है।

जिससे रोजगार के साधन बनकर अपनी आजीविका को सुधार सकते हैं। जब एक जंगल जलता है, तो सिर्फ पेड़ नहीं जलते, बल्कि धरती का एक फेफड़ा राख हो जाता है। आज हमारे हरे–भरे जंगल इंसानी लापरवाही और बढ़ती गर्मी की वजह से धधकती भट्टी में बदल चुके हैं। प्रकृति को हमारी जरूरत नहीं है, हमें प्रकृति की जरूरत है। अगर प्रकृति बची रहेगी, तभी मानव सभ्यता का अस्तित्व रहेगा।

साईं सृजन पटल–अक्टूबर 2024

पिरूल के कलात्मक कौशल द्वारा आजीविका संवर्धन के साधनों का विकास कर रही हैं – मंजू आर. साह

प्राचीन काल से ही कला को आजीविका के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है। उत्तराखण्ड एक छोटा सा पर्वतीय राज्य है, जहां नैसर्गिक सौंदर्य प्रदान करने में ईश्वर ने असीम कृपा की है। राज्य की सुंदरता को अक्षुण्ण रखने में यहां की महिलाओं का एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पर्यावरण और महिलाओं का रिश्ता सदियों से रहा है। इसी परंपरा को आगे बढ़ाने का कार्य राज्य की श्रीमती मंजू आर.साह कर रही हैं जो कि मूल रूप से द्वाराहाट, जिला अल्मोड़ा की निवासी हैं व वर्तमान में जी.जी.आई.सी. ताड़ीखेत में तकनीकी सहायक के पद पर कार्यरत हैं। श्रीमती मंजू आर.साह वर्तमान में पीरुल जैसी वस्तु के प्रयोग द्वारा कुमाऊँ क्षेत्र में शिल्प कला को आगे बढ़ाने में निरन्तर प्रयासरत हैं, जिससे इस अनुपयुक्त वस्तु को उपयुक्त बनाया जा सके। भारत में लगभग सभी पर्वतीय क्षेत्रों में मिलने वाले चीड़ के वृक्षों के तनों में गुच्छेनुमा आकार के लंबे तथा नुकीले पत्तों को ही पिरूल कहा जाता है। वनाग्नि का प्रमुख कारण पिरूल को माना जाता है क्योंकि सूखने के बाद यह तेजी से सुलगता है और इसे बुझाने में काफी मेहनत करनी पड़ती है वहीं दूसरी ओर इसके धुँए से पर्यावरण प्रदूषित होता है अतः पिरूल एक वो विकल्प है जिसका सही सदुपयोग किया जा सके। यह काफी मजबूत होता है, यह आसानी से नष्ट भी नहीं होता और ना ही सड़ता और गलता है। मंजू पिरूल से सजावटी वस्तुएं बना रही हैं साथ ही उसका प्रशिक्षण भी दे रही हैं। आज उसी कला को जीवंत रूप देते हुए इन्होंने पिरूल से अनेक प्रकार की टोकरियाँ, फूलदान, पैनदान, हैट,पायदान, वॉल–हैंगिंग, कोस्टर, राखियाँ आदि के साथ महिलाओं के आभूषणों का भी निर्माण किया है, जो आकर्षक व मजबूत होने के साथ–साथ इको फ्रैंडली भी हैं। इन सभी वस्तुओं में प्राकृतिक रंगों और पारदर्शी वार्निश के प्रयोग द्वारा इनको आकर्षक बनाया जाता है जिससे इसकी मजबूती बनी रहती है तथा गंदा होने पर आसानी से धोया जा सकता है। मंजू आर.साह को इण्डिया इण्टरनेशनल साइंस फैस्टिवल कोलकाता –2019 में बैस्ट अपकमिंग आर्टिशियन अवार्ड, श्री अरविंदो सोसाइटी द्वारा शिक्षा में शून्य निवेश नवाचार प्रशस्ति पत्र, उत्तराखण्ड सम्मान समारोह– 2021 द्वारा सम्मान पत्र प्रदान किया गया है। दूरदर्शन उत्तराखण्ड के 'शाबास उत्तराखण्ड' कार्यक्रम तथा 'ओहो रेडियो' में साक्षात्कार द्वारा भी इन्होंने पिरुल के प्रयोग को राज्य स्तर पर पहचान देने का प्रयास किया किया है। मेरे महाविद्यालय में भी ऑनलाइन व ऑफलाइन प्रशिक्षण दे चुकी हैं। आज आवश्यकता है कि पर्वतीय क्षेत्र के इस अनुपयुक्त वस्तु को आजीविका के रूप में प्रयोग करने के लिए मंजू आर.साह को एक राष्ट्रीय पहचान मिले।

प्रस्तुति: डॉ0 विनीता चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर
डी.डब्लू.टी.कॉलेज, देहरादून

13

पिरुल को पर्यावरणीय संकट से अवसर में बदलने वाली मंजू आर. साह का कार्य उत्तराखंड की महिलाओं, युवाओं और समाज के लिए प्रेरणास्रोत है। उनका यह प्रयास दर्शाता है कि दृढ़ संकल्प, नवाचार और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता के माध्यम से स्थानीय संसाधनों को रोजगार, स्वावलंबन और पर्यावरण संरक्षण से जोड़ा जा सकता है। 'गौरा देवी सम्मान' उनकी इसी पर्यावरणीय चेतना और सामाजिक प्रतिबद्धता का सम्मान है।

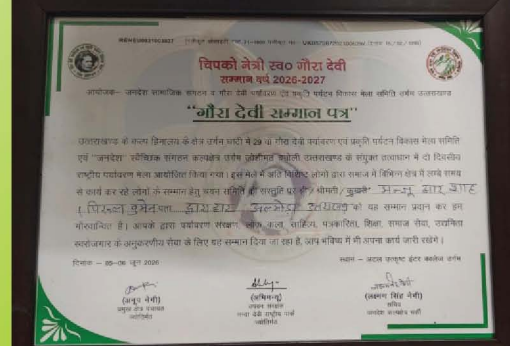

सावधानी

चिकित्सा उपकरणों की सुरक्षा में जागरूकता

मेटेरियोविजिलेंस : एक रिपोर्ट जो बचा सकती है किसी की जान

आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में चिकित्सा उपकरण (Medical Devices) रोगों की पहचान, उपचार और रोगी देखभाल का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। वेंटिलेटर, इन्फ्यूजन पंप, ईसीजी मशीन, मॉनिटर, सिरिंज, कैनुला तथा रक्त आधान सेट जैसे उपकरण प्रतिदिन लाखों मरीजों के उपचार में उपयोग किए जाते हैं। इन उपकरणों की विश्वसनीयता और सुरक्षा सीधे रोगी के जीवन से जुड़ी होती है। यदि इनमें किसी प्रकार की तकनीकी खराबी, गुणवत्ता दोष या संचालन संबंधी समस्या उत्पन्न हो जाए, तो यह मरीज की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बन सकती है।

इसी चुनौती से निपटने के लिए मेटेरियोविजिलेंस (Materiovigilance) की अवधारणा विकसित की गई है। यह चिकित्सा उपकरणों से जुड़े प्रतिकूल प्रभावों, खराबियों, गुणवत्ता संबंधी दोषों तथा संभावित जोखिमों की पहचान, निगरानी, विश्लेषण और रिपोर्टिंग की वैज्ञानिक प्रक्रिया है। इसका मुख्य उद्देश्य मरीजों की सुरक्षा सुनिश्चित करना तथा स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में निरंतर सुधार करना है। भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा संचालित मेटेरियोविजिलेंस प्रोग्राम ऑफ इंडिया (MvPI) देशभर में उपयोग किए जा रहे चिकित्सा उपकरणों की सुरक्षा और कार्यक्षमता की निगरानी करता है। इस कार्यक्रम का राष्ट्रीय समन्वय इंडियन फार्माकोपिया कमीशन (IPC) द्वारा किया जाता है।

इस दिशा में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), ऋषिकेश महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। संस्थान में स्थापित मेडिकल डिवाइस एडवर्स इवेंट मॉनिटरिंग सेंटर (MDMC) चिकित्सा उपकरणों से संबंधित प्रतिकूल घटनाओं की रिपोर्टिंग और विश्लेषण का कार्य करता है। यह केंद्र चिकित्सकों, नर्सों, फार्मासिस्टों, बायोमेडिकल इंजीनियरों, तकनीशियनों तथा अन्य स्वास्थ्यकर्मियों को उपकरणों से जुड़ी किसी भी संदिग्ध घटना की रिपोर्ट करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

अक्सर छोटी प्रतीत होने वाली तकनीकी खराबियां भविष्य में गंभीर दुर्घटनाओं का कारण बन सकती हैं। समय पर रिपोर्टिंग से' उपकरणों से जुड़े सुरक्षा जोखिमों की शीघ्र पहचान होती है।

- प्रतिकूल घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकी जा सकती है।
- दोषपूर्ण या खराब उपकरणों को समय रहते चिन्हित किया जा सकता है।
- मरीजों की सुरक्षा और उपचार की गुणवत्ता में सुधार होता है।
- राष्ट्रीय स्तर पर नियामकीय निर्णयों को सशक्त आधार प्राप्त होता है।

बहुत से लोग केवल गंभीर दुर्घटनाओं को ही रिपोर्ट योग्य मानते हैं, जबकि वास्तविकता इससे कहीं व्यापक है। निम्नलिखित घटनाओं की भी रिपोर्ट की जानी चाहिए।

- इन्फ्यूजन पंप द्वारा गलत मात्रा में दवा देना।
- आईवी कैनुला या ट्यूब से रिसाव होना।
- सिरिंज की सुई में अवरोध उत्पन्न होना।

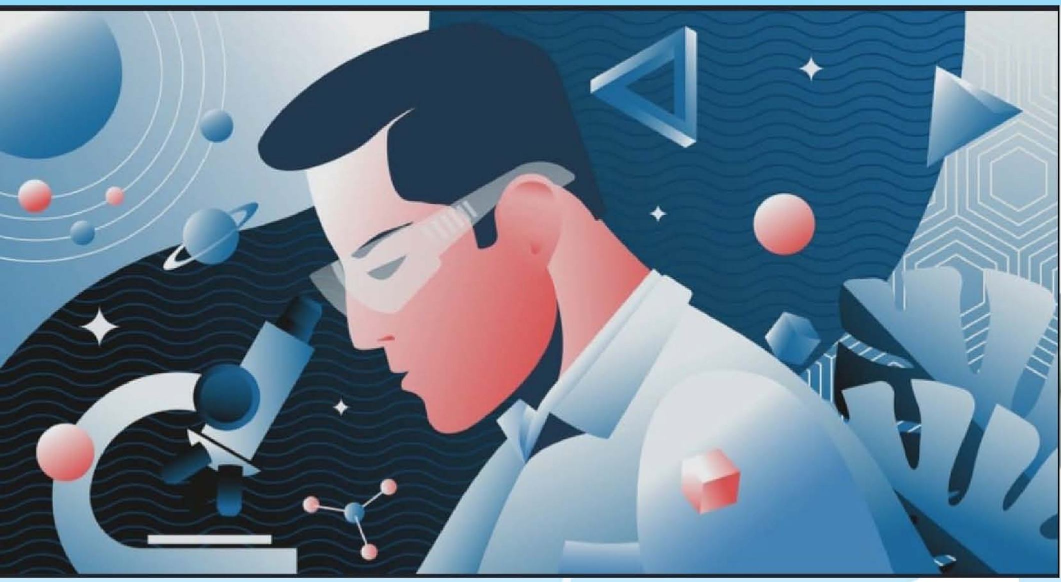

- ईसीजी मशीन द्वारा रिपोर्ट प्रदर्शित करने में असामान्य देरी होना।
- वेंटिलेटर का अचानक कार्य करना बंद कर देना।
- रक्त आधान सेट में गुणवत्ता संबंधी दोष पाया जाना।
- मॉनिटर द्वारा गलत रीडिंग प्रदर्शित करना।
- सक्शन पंप का दबाव कम होना।
- किसी उपकरण का टूट जाना या उसका कोई भाग अलग हो जाना।
- उपयोग किए गए दस्तानों का पुनः पैक होकर उपयोग में आ जाना।

यहां तक कि यदि किसी खराबी से मरीज को प्रत्यक्ष नुकसान नहीं पहुंचा हो, तब भी ऐसी निकट–त्रुटि (Near Miss) घटनाओं की रिपोर्ट करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि वे भविष्य में संभावित दुर्घटना का संकेत हो सकती हैं। एम्स ऋषिकेश में प्राप्त और सत्यापित रिपोर्टों को राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफॉर्म ADRMS (Adverse Drug Reaction Monitoring System) में दर्ज किया जाता है। इसके पश्चात ये रिपोर्टें राष्ट्रीय समन्वय केंद्र को भेजी जाती हैं, जहां विशेषज्ञों द्वारा सिग्नल डिटेक्शन, जोखिम मूल्यांकन, प्रवृत्ति विश्लेषण तथा सुरक्षा समीक्षा की जाती है। इन निष्कर्षों के आधार पर आवश्यक सुधारात्मक एवं निवारक कदम उठाए जाते हैं। उल्लेखनीय है कि स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा मेडिकल डिवाइस नियम, 2017 अधिसूचित किए गए, जो भारत में 1 जनवरी 2018 से प्रभावी हैं। इन नियमों के अंतर्गत स्वास्थ्यकर्मियों के साथ–साथ आम नागरिक और मरीज भी प्रतिकूल घटनाओं की रिपोर्ट कर सकते हैं।

कैसे करें रिपोर्ट ?

टोल–फ्री नंबर : 1800–180–3024

(सोमवार से शुक्रवार, प्रातः 9:00 बजे से सायं 5:30 बजे तक)

ई–मेलः mvpi-ipc@gov.in

मोबाइल एप : ADR PvPI 2.0 (गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध)

चिकित्सा उपकरणों की सुरक्षा केवल निर्माताओं, अस्पतालों या नियामक संस्थाओं की जिम्मेदारी नहीं है। यह चिकित्सकों, स्वास्थ्यकर्मियों, अस्पताल प्रबंधन और समाज की साझा जिम्मेदारी है। जितनी अधिक और सटीक रिपोर्टिंग होगी, उतनी ही शीघ्र संभावित खतरों की पहचान हो सकेगी और मरीजों को सुरक्षित एवं गुणवत्तापूर्ण उपचार उपलब्ध कराया जा सकेगा।

याद रखिए– आपकी एक रिपोर्ट किसी मरीज की जान बचा सकती है। इसलिए चिकित्सा उपकरणों से जुड़ी किसी भी प्रतिकूल घटना, खराबी या संदिग्ध समस्या की जानकारी अवश्य दें। सुरक्षित चिकित्सा और सुरक्षित भारत की दिशा में यही हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है।

प्रस्तुति –
प्रो.(डॉ.) पुनीत धमीजा,आचार्य,
औषधि विज्ञान विभाग, एम्स, ऋषिकेश

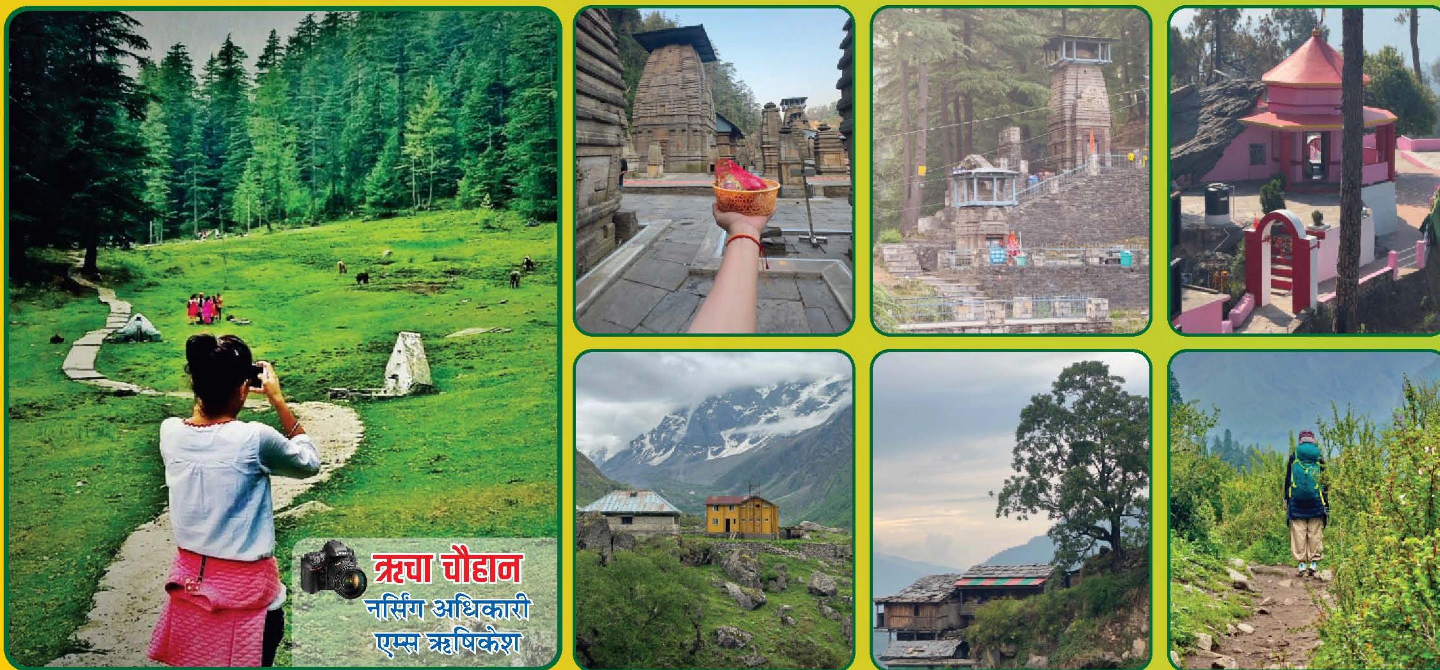

पृष्ठ : 21 का शेष ....

सबसे लंबी रेल सुरंग देवप्रयाग...

लाइन रेलवे के लिए पर्याप्त चौड़ाई, आधुनिक ड्रेनेज सिस्टम, वेंटिलेटर शापट और आपातकालीन एस्केप रूट जैसी सुविधाएं विकसित की जा रही हैं। परियोजना के हिमालय के निर्माणाधीन अवस्था वाली चट्टानों के संवेदनशील क्षेत्र एवं भूकंपीय जोन – 4 में होने के कारण इस क्षेत्र मे सुरंग निर्माण कार्य चुनौतीपूर्ण रहा है। सुरंग के अन्दर पानी का रिसाव, कमजोर चट्टानें, फॉल्ट जोन जैसी समस्याओ के बावजूद भी टनल–8 के दोनों सिरों का सफल मिलान पूरा हुआ है। उत्तराखंड में इस परियोजना के पूरा होने के बाद चार धाम यात्रा आसान हो जाएगी। ऋषिकेश से कर्णप्रयाग के बीच का 6 घंटे से अधिक का सफर घटकर लगभग 2.5 घंटे रह जाएगा। इससे पर्यटन और तीर्थाटन को बढ़ावा मिलेगा , ऋषिकेश– कर्णप्रयाग के बीच 125 किलोमीटर रेल लाइन बिछाने का कार्य 20 मई से शुरू कर दिया गया है । नौ साल बाद ऋषिकेश से आगे सबसे पहले शिवपुरी– गूलर के बीच छह किलोमीटर की दूरी पर रेल लाइन बिछाई जाएगी। रेल लाइन बिछाने में ढाई साल का समय लगेगा। जिस पर 750 करोड रूपये का अनुमानित खर्च आएगा।

वर्ष 2017 में ऋषिकेश– कर्णप्रयाग रेल लाइन निर्माण का कार्य शुरू हुआ था। इसके लिये वर्ष 2020 मे वीरभद्र से योगनगरी ऋषिकेश के बीच 5.6 किलोमीटर लंबी नई रेल लाइन बिछाई गई। पहले ब्लॉक सेक्शन के तहत इस बीच ऋषिकेश– हरिद्वार हाईवे पर अंडर ब्रिज और दून मार्ग पर ओवरब्रिज का निर्माण किया गया। नौ साल बाद अब पहली बार ऋषिकेश से आगे रेल बिछाने का काम शुरू हो रहा है। ऋषिकेश–कर्णप्रयाग रेल परियोजना का पहला चरण जून 2028 में ब्यासी तक पूरा हो जाएगा। पहले चरण में ट्रेनों का संचालन ब्यासी तक होगा। दिसंबर 2029 तक ट्रेन को कर्णप्रयाग तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। रेलवे की स्थायी संसदीय समिति द्वारा परियोजना के कार्यो की निरन्तर समीक्षा की जा रही है। रेल लाइन बिछाने में छह करोड़ रूपये प्रति किलोमीटर खर्च आएगा। एक माह मे छह किलोमीटर ट्रैक बिछाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। रेल विकास निगम ने ट्रैक विमानन के लिए स्थान सर्वेक्षण कार्य पूरा कर लिया है।

कर्णप्रयाग रेल लाइन पर ब्लास्टलेस तकनीक पर आधारित पटरियां बिछायी जानी हैं। यह पूरी तरह आरसीसी स्लैब पर आधारित है। इस प्रकार का ट्रैक यूरोप, चीन और जापान में हाई स्पीड रेल नेटवर्क मे उपयोग किया जाता है। ऋषिकेश–कर्णप्रयाग रेल परियोजना गढ़वाल मंडल के पर्वतीय जिलों को देश के दूसरे हिस्सों को रेल नेटवर्क से जोड़ने के साथ ही सामरिक दृष्टि से बेहद अहम है । रेल परियोजना के निर्माण से स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर बढेंगे और व्यापार को भी मजबूती मिलेगी। साथ ही इस क्षेत्र मे आपदा के समय एवं सामरिक दृष्टि से तेज और सुरक्षित परिवहन की सुविधा उपलब्ध हो सकेगी पर्यटन और तीर्थाटन को बढ़ावा मिलेगा।

प्रस्तुति : डॉ. रमेश चन्द्र भट्ट
विभागाध्यक्ष भूगोल,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कर्णप्रयाग